चन्दामामा
नवम्बर १९६७

Chandamama
Press
VADAPALANI
MADRAS-26
OFFERS YOU...
FINEST PRINTING.-
Equipped with
PHOTO GRAVURE
KLIMSCH CAMERA
VARIO KLISCHOGRAPH-
-BLOCK MAKING
and a
host of Others....

चन्दामामा

नवम्बर १९६७

संपादकीय	१	बचत की करामत	२५
भारत का इतिहास	२	सन्देह का भूत	३३
पुण्य जल	५	ताम्बे का टुकड़ा	४४
पाताल दुर्ग (धारावाहिक)	९	कृष्णावतार	४९
सहिष्णुता	१७	अरण्यपुराण	५७
पिशाची का प्रसव	२३	फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता	६४

VICKS
VapoRub

बनना चाहती हूँ

—और इसके लिए आप को इसे जरूर पढ़ाना। पढ़ाई के लिए पैसा होना जरूरी है, जो सुनियोजित बचत से ही मिल सकता है। इसलिए सेविंग्स खातेमें या रिकरिंग डिपोज़िट स्कीम के अंतर्गत अपनी बचत पंजाब नेशनल बैंक में जमा कीजिये। आप इसके सपने को पूरा कर सकेंगे।

पंजाब नेशनल बैंक

कोलगेट से दिनभर दुर्गंधमय श्वास से मुक्त रहिए और दन्त-क्षय को रोकिए !

क्योंकि: एक ही बार ब्रश करने से कोलगेट डेन्टल क्रीम ८५ प्रतिशत दुर्गन्ध पैदक और दंत क्षयकारी जीवाणुओंको दूर कर देता है।

प्रयोगिक परीक्षणों से सिद्ध हो गया है कि कोलगेट १० में से ७ मामलों में दुर्गन्धमय श्वास को तत्काल दूर कर देता है और खाना खाने के तुरन्त बाद कोलगेट विधि से ब्रश करने पर दन्त चिकित्सा के समस्त इतिहास में पहले से किसी भी समय की तुलना में अधिक व्यक्तियों का अधिक दन्त-क्षय दूर होता है। केवल कोलगेट के पास ही यह प्रमाण है।
बच्चे कोलगेट से अपने दांतों को नियमित रूप से ब्रश करने की आदत आसानी से डाल लेते हैं क्योंकि इसकी देर तक रहने वाली पिपरमेंट जैसी खुशबू उन्हें प्यारी होती है।

नियमित रूप से कोलगेट द्वारा ब्रश कीजिये ताकि इससे आपकी सांस अधिक साफ़ और ताज़ा तथा दांत अधिक सफ़ेद हों।

यदि आपको पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर से भी ये सभी लाभ मिलेंगे ... यह डिब्बा महीनों तक चलता है।

—सारी दुनिया में अधिक से अधिक लोग किसी दूसरी तरह के डेंटल क्रीम के बदले कोलगेट ही खरीदते हैं

नौजवानों की पसन्द है फ़िलिप्स

नौजवान फ़िलिप्स को पसन्द करते है... कार्यव्यस्त व्यक्ति, खेलकूद के शौकीन, अध्ययनशील व्यक्ति... और फिर वे प्रसन्नचित्त व्यक्ति जिन्हें मित्रों की कमी नहीं... विनोदशील व्यक्ति जिनके चरण निर्दिष्ट उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ते हैं। सारांश यह कि आप जैसे नौजवान... फ़िलिप्स ही क्यों? वे खुद बतायेंगे। फ़िलिप्स मज़बूत है (यह उच्च दर्जे के इस्पात से बना है)— सख्ती से इस्तेमाल होनेपर भी मज़बूती कायम रखने के लिये बना है। फ़िलिप्स सुन्दर भी तो है। इसका शानदार, शक्तिसम्पन्न ढांचा उनकी श्रेष्ठतम अभिरुचि का सार्थक प्रतीक है। एक श्रेष्ठ साइकिल, हरेक दृष्टिकोण से, जो इस युग के कार्यव्यस्त नौजवानों के लिये खास तौर से प्रस्तुत किया गया है।

आप पसन्द करेंगे

फ़िलिप्स

टी. आई. साइकिल्स आफ इण्डिया,
अम्बत्तूर, मद्रास-५३.

"(मालिक: ट्यूब इन्वेस्टमेन्ट्स आफ इन्डिया लिमिटेड, मद्रास-१)"

J. B. MANGHARAM'S SALTO BISCUITS. J. B. MANGHARAM'S SALTO BISCUITS. J. B. MANGHARAM'S

SALTO

Finest Biscuits you ever tasted

SALTO

J.B.MANGHARAM&CO.

GWALIOR (*India*)
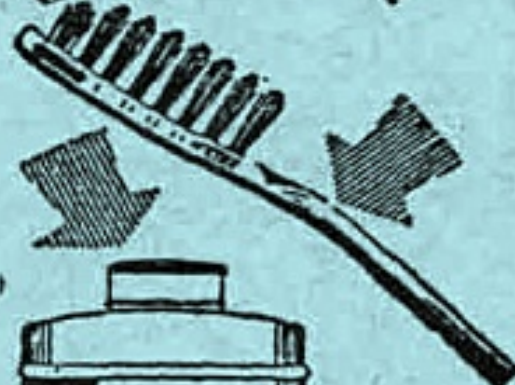
by
THE NATIONAL TRADING CO.
Manufacturers of
KASHMIR SNOW BEAUTY AIDS
BOMBAY-2, MADRAS-32

मुन्नू बदल गया

क्या घर में नहीं है? बहन मुन्नू तो घर सर पर उठाये रखता है

खेल रहा है। अब वह पहले जैसा मुन्नू नहीं रहा

भई वाह मुन्नू बेटा तो बड़े अच्छे खिलौने बना रहा है। यह मिट्टी कैसी है?
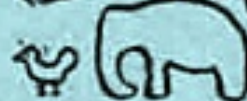
यह मिट्टी नहीं है यह नुसेकोस प्लास्टिकले है। जब से यह लाई हूँ मुन्नू बिलकुल बदल गया है। काम में व खेल में बहुत मन लगाता है।

मैं आज ही अपनी शैला को भी यह लाढूँगी

नुसेकोस प्लास्टिकले

बच्चों के लिये एक खिलौने बनाने का अदभुत रंग बिरंगा मसाला जो बार-बार काम में लाया जा सकता है। १२ आकर्षक रंगों में सर्वत्र प्राप्य है।

नर्सरी स्कूल व होम इक्विपमेन्ट कम्पनी
पोस्ट बाक्स नं १४१६, दिल्ली-६

गोपाल का रहस्य

राष्ट्रीय बचत संगठन

davp 67/134

Introducing.....

KESARI SCENTED SUPARI

BEST QUALITY SUPARI MADE OUT OF FIRST CLASS SELECTED ARECANUT AND OTHER INGREDIENTS

(A Mangalore made Products)

AVAILABLE IN PACKETS OF 30 IN AN ATTRACTIVE COVER BOX ALONG WITH A LUX SOAP (Guest Size) AS A GIFT

Manufacturers.

PRATAP CORPORATION

AZIZUDDIN ROAD, P. B. No. 117, MANGALORE (S. India). Phone P. P: 3104

Wanted Agents and Distributors throughout the country.

DEEPAVALI GREETINGS TO ALL

Try once for full satisfaction

12

-SADHANA

शक्ति और उत्साह के लिये!
Bournvita
कैडबरिज़
बोर्नविटा

जल्दी कीजिये!
जल्दी कीजिये!

आखिरी मौक़ा

रु. १०,००० के पुरस्कार

दो प्रथम पुरस्कार २,५०० रु. के
दो द्वितीय पुरस्कार १,००० रु. के
दो तृतीय पुरस्कार ५०० रु. के
दो चतुर्थ पुरस्कार १०० रु. के
२१ सांत्वना पुरस्कार ५० रु. के

आप द्वारा खींचा गया सुंदरतम चित्र
३१ दिसंबर '६७ के पहले भेजिये
... इस पर शायद आप को
इन में से एक बड़ा पुरस्कार मिले

क्लिक III

अगर आपके पास क्लिक III कैमरा है तो आजही तस्वीरें खींचना शुरू कर दीजिये। [illegible]

आज ही क्लिक III से तस्वीरें खींचना शुरू कर दीजिये और प्रतियोगिता के लिए अपनी एन्ट्री ३१ दिसंबर १९६७ से पहले भेज दीजिये।

आगफ़ा गेवर्ट इंडिया लि. बंबई-नयी दिल्ली-कलकत्ता-मद्रास

PAG-96-303 HN

बूढ़े दादा, हमलोग इसलिये आप के पास आये हैं कि...
जाओ यहाँ से—मुझे काम करने दो।
दिलीप और उसके साथियों ने बूढ़े दादा की मदद की!

बिस्कुट

कोको

चॉकलेट

द्वारा

दीवाली का

दुगुना आनन्द

लीजिये।

साठे बिस्कुट एण्ड चॉकलेट कं. लि., पूना-२

जब आप अपने मुन्ने का दुलार करती हैं...

...क्या आपको यह नहीं लगता कि आप के मुन्ने की त्वचा संसार की सब चीज़ों से ज़्यादा कोमल और नाज़ुक है?

सचमुच ऐसा ही है! और यही कारण है कि आप के मुन्ने की त्वचा को ब्रेडोसोल की सुकोमल और दुलार भरी संभाल की ज़रूरत है।

ब्रेडोसोल एक अति मृदु कृमिनाशक है जो केवल बिनाका बेबी पावडर में पाया जाता है, और आप के मुन्ने की कोमल त्वचा की लाल चित्तियों और जलन से रक्षा करता है।

जी हाँ, बिनाका बेबी पावडर भी नन्हे-मुन्नों को प्यार करता है। आप भी अपने मुन्ने के लिए बिनाका बेबी पावडर इस्तेमाल कीजिए और देखिए कि वह कितनी प्रसन्नता से मुस्कराता है!

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
हम इस अंक में हम "सन्देह का भूत" दे रहे हैं।
हम दूसरों पर सन्देह करके प्रायः अपना भय ही व्यक्त करते हैं। और भय का हमेशा वास्तविकता से सम्बन्ध नहीं होता।
निराधार सन्देह मानसिक शान्ति का शत्रु है। और अनिश्चित सन्देह पर प्रतीकारपूर्ण कार्यवाही करना जल्दबाजी है।
वर्ष: १९ नवम्बर १९६७ अंक: ५
CHITRA

पुण्य जल

कभी भरतपुर का दिवाकर नाम का प्रतापी राजा हुआ करता था, उसका एक बार शत्रु से युद्ध हुआ। वह उसे जीतकर वापिस आ रहा था, कि रास्ते में अपनी राज्य की सीमा पर मरुस्थल में राजा को प्यास लगी। सैनिक पानी खोजने निकल पड़े। उनको एक जगह एक गढ़ा दिखाई दिया, उसकी तह में दो तीन अंगुल पानी था, जब उन्होंने उसको पिया, तो वह नारियल के पानी की तरह स्वादिष्ट निकला। सैनिक बड़े खुश हुए। वे थोड़ा सा जल राजा के लिए ले गये। राजा ने पानी पीकर कहा—"इस रेगिस्तान में इतना अच्छा मीठा पानी है, यह हमने कभी न सुना था।

वह स्वयं गढ़े के पास गया। सब ने उसमें से पानी पिया। पर फिर भी गढ़े का पानी कम न हुआ।

राजा ने उस दिन वहीं पड़ाव किया और डेरे डलवा दिये। उस समय वहाँ एक सन्यासी आया। वह गढ़े में उतरा। गढ़े के पानी को सिर पर छिड़ककर, उससे मुँह धोकर, पानी पीकर राजा को देखने गया। उसे आशीर्वाद देकर उसने कहा। "यह पुण्य जल है, इसको पीने का लाभ तुमको इतने समय बाद मिला है।

इसको क्यों पुण्य जल कहा जा रहा है! इसकी क्या विशेषता है?" राजा ने सन्यासी से पूछा।

सन्यासी ने इस प्रकार बताया:—
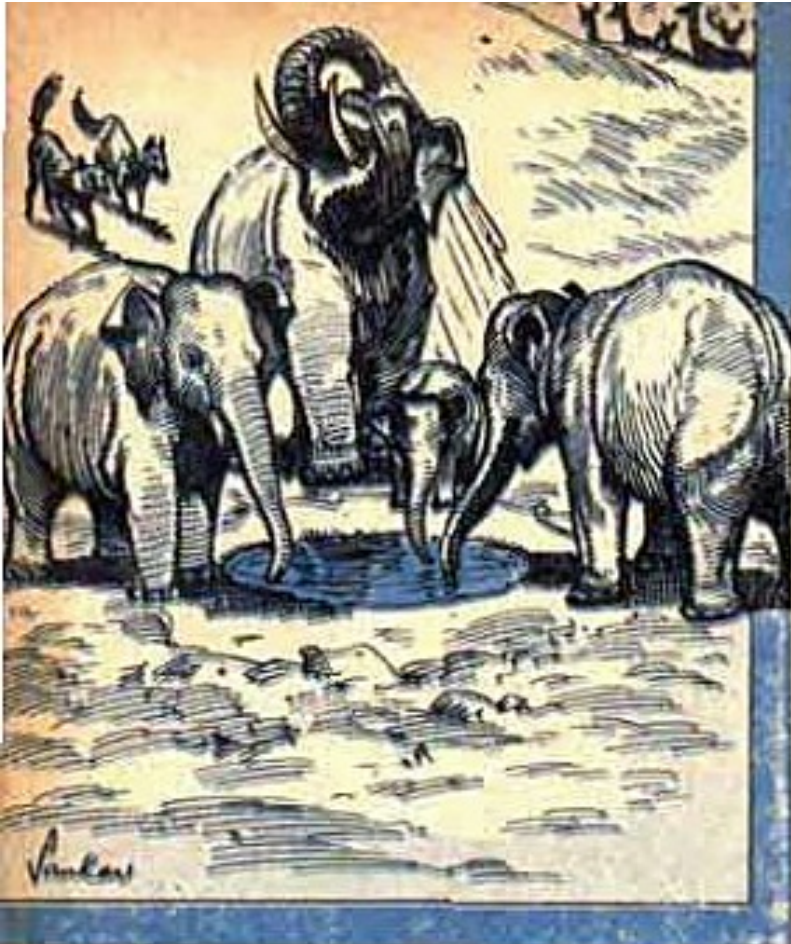
एक समय था, जब यहाँ एक गढ़ा भी न था, गरमियों में एक बार वर्षा हुई। अगले दिन एक चिड़िया धूप न सह सकी। वह यहाँ गिर गई। छटपटाते हुए उसने अपनी चोंच यहाँ मारी। कुछ नमी उसके शरीर पर लगी। उसी से वह चिड़िया खुश हो गई। उसमें ताकत आ गई और उड़ गई, तब वहाँ एक गढ़ा बन गया। उसके बाद उस गढ़े में थोड़ा-सा वर्षा जल जमा हो गया। एक प्यासा गिद्ध आया, वह गढ़े को और बड़ा करके चला गया। फिर इस प्रान्त की लोमड़ियाँ, भेड़िये आदि पानी के लिए आये। गढ़ा और बड़ा करके पानी पीकर चले गये। धीमे धीमे जंगली सूअर इस गढ़े को और बड़ा करते गये। होते होते यह इतना बड़ा हो गया कि हाथी भी इसमें लुढ़का करते। गढ़ा बहुत बड़ा और गहरा हो गया। जब कभी वर्षा होती, तो गढ़ा भर जाता। चाहे कितनी भी गरमी पड़े, इसकी तह में कुछ न कुछ पानी रहता है, और रेगिस्तान में फिरनेवाले प्राणियों का यह प्यास बुझाता है। सारे रेगिस्तान में यह ही एक जलाशय है। इसका जल बड़ा पवित्र है। मैं हमेशा यहीं आकर पानी पिया करता हूँ।"

यह बताने पर सन्यासी के चले जाने के बाद राजा को एक बात सूझी। इतने आदमियों ने पानी पिया, पर गढ़े की तह का पानी कम न हुआ। यानि भूमि के अन्दर पानी बहुत दूर तक है। यदि यहाँ अच्छा जलाशय खुदवा दिया गया तो रेगिस्तान में आने जानेवालों के लिए बहुत उपयोगी रहेगा। इससे मुझे भी अमर कीर्ति मिलेगी।

यह सोचकर दिवाकर महाराजा ने उस गढ़े की जगह एक बड़ा तालाब खुदवाया,

और उसके चारों ओर पत्थरों की सीढ़ियाँ लगवा दीं, पास में ही एक धर्मशाला बनवाई। वहाँ आराम करनेवालों को ताकि जंगली जानवरों से तकलीफ़ न हो उसने धर्मशाला के चारों ओर ऊँची दीवार बनवायी। दिन रात वहाँ पहरा देने के लिए उसने सैनिकों को भी नियुक्त किया। उस सरोवर का नाम दिवाकर सरोवर रखा गया।

सरोवर के पूर्ण होने पर पूजा आदि की गई। उसी समय राजा ने तालाब के पानी से आचमन किया। तब उसे पानी कुछ कड़वा-सा लगा। उसमें से कुछ बू भी आई। उसने सोचा कि क्योंकि तालाब नया नया खोदा गया था, इसलिए ही पानी का स्वाद कुछ ऐसा था।

राजा ने सोचा कि उस सरोवर से उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इसलिए वह यह मालूम किया करता कि उसका कितने आदमी उपयोग कर रहे थे और वे उसके बारे में क्या क्या कह रहे थे। सब कहने लगे कि तालाब का पानी नहाने के लिए तो ठीक था पर पीने के लिए अच्छा न था। चूँकि धर्मशाला की सुरक्षा के लिए नियुक्त सैनिकों को वही पानी पीना पड़ता
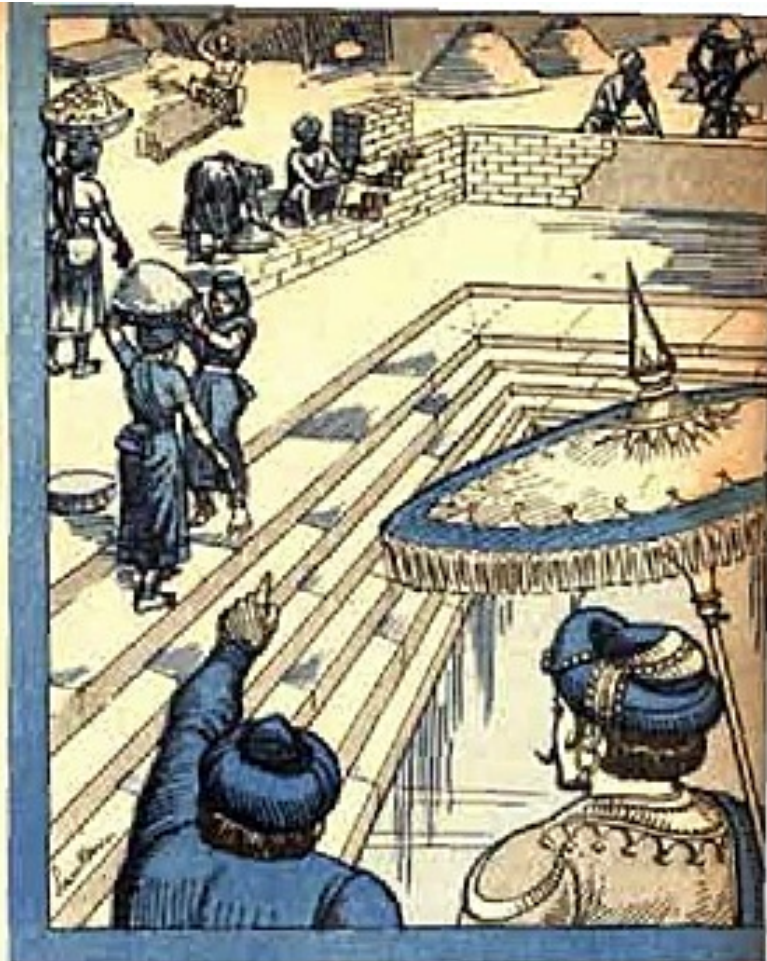
था, इसलिए उनको बड़ा कष्ट हो रहा था, उन्होंने राजा से प्रार्थना भी की कि उनको वहाँ न भेजा जाये।

राजा हताश हो गया। "वहाँ रोज एक सन्यासी आता है। उसे एक बार मेरे पास भेजो।" राजा ने सैनिकों से कहा।

"जब से तालाब खोदा गया है, तब से कोई सन्यासी उस तरफ नहीं आया है।" सैनिकों ने जवाब दिया।

राजा को और भी आश्चर्य हुआ। उसने सैनिकों से कहा—"तालाब के पास

ही कहीं कोई सन्यासी होगा। उसे ढूँढ़ो और मेरे पास लाओ।"

कुछ दिनों बाद सन्यासी आया। "राजा, सुनता हूँ कि तुमने मुझे बुलाया है। क्या बात है?" उसने पूछा।

"आप जैसों के लिए मैंने तालाब खुदवाया। वहाँ सब सुविधायें दीं। पर आप उस तरफ आ ही नहीं रहे हैं। क्या कारण है?" राजा ने पूछा।

"हाँ, मैं एक और जगह जा रहा हूँ। तुमने कारण पूछा है, इसलिए बता रहा हूँ। अब यह पुण्य जल नहीं है। मूक पशुओं ने अपनी शक्ति से जो जलाशय बनाया था, उसे तुमने अपने सेवकों से बड़ा करवाया। यह अच्छा ही किया, परन्तु जो जानवर उस पानी के भरोसे जी रहे थे, तुमने उनको न आने देने के लिए चारों ओर बड़ी बड़ी दीवारें खड़ी करवा दीं, पहरेदार तैनात कर दिये। उसको तुमने अपना कीर्ति चिन्ह समझा। उसका नाम भी दिवाकर सरोवर रखा। इसलिए वह पुण्य जल कलुषित हो गया।" सन्यासी ने कहा।

राजा को अपनी गलती समझ में आ गई। उसने सरोवर के चारों ओर बनवाई, दीवार तुड़वा दी। वहाँ से सैनिक भी हटा दिये और जिस पत्थर पर "दिवाकर सरोवर" लिखा था, उसे भी निकलवा दिया।

थोड़ा और समय बीता, लोग कहने लगे कि उस सरोवर का पानी अमृत की तरह मीठा था। रेगिस्तान के बीचों बीच उस तरह के जलाशय का होना राहगीरों के लिए बड़ा उपयोगी था।
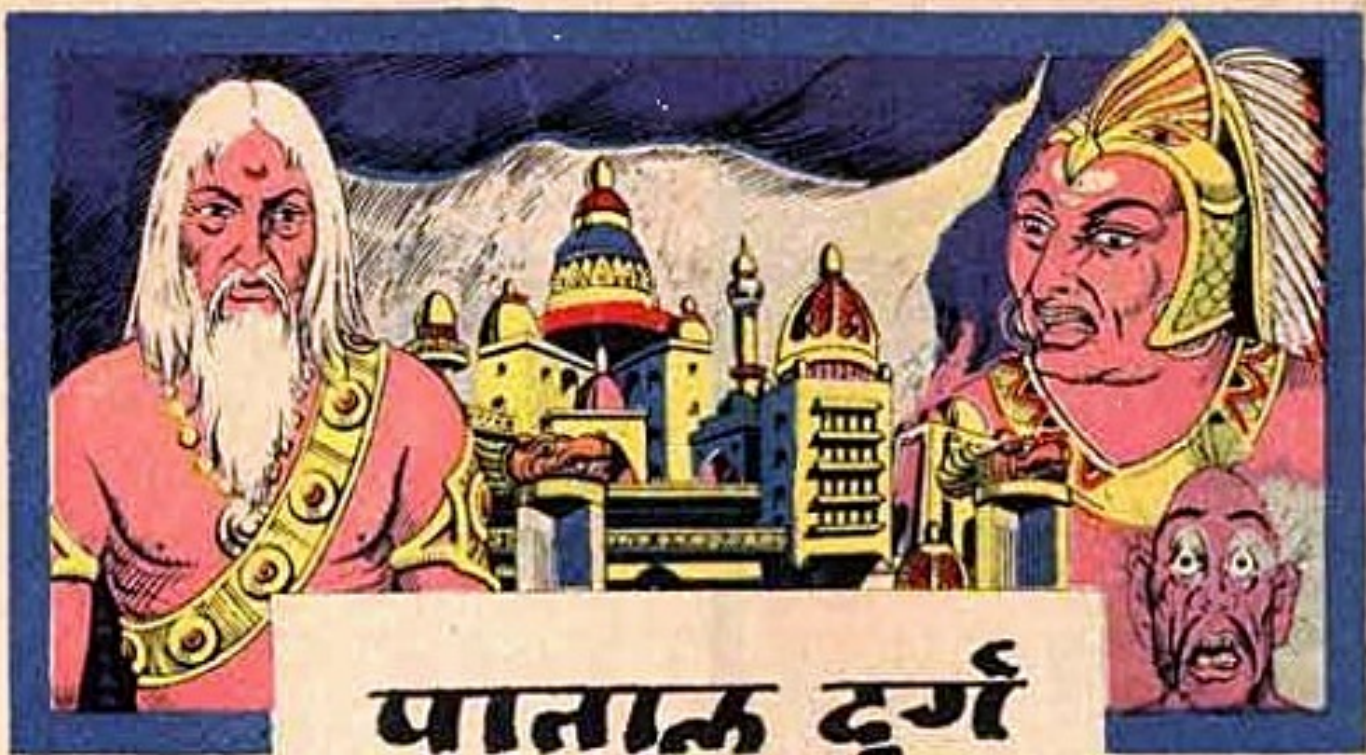
पाताल दुर्ग

[१८]

[कालशम्बर मान्त्रिक रात के समय सरोवर में गया, जलस्तम्भन करके, वह सुनहले रंग के मगर के बच्चे को लेकर पानी से बाहर निकला। उसी समय पाताल दुर्ग से राक्षसों के छोड़े हुए पटाके आकाश में उठने लगे। मान्त्रिक, अपने साथियों के साथ अपने गुप्त निवास की ओर निकला। बाद में—]

महाकलि राक्षस के पाताल दुर्ग का क्षेत्रफल कोई एक मील होगा। दुर्ग के चारों ओर गोलाई में क्योंकि ऊँचे ऊँचे पहाड़ थे, इसलिए वहाँ रहनेवाले यह न जान पाते थे कि वहाँ कोई किला था।

किले में से जंगल में जाने के लिए पहाड़ में, राक्षसों ने एक तंग रास्ता बना लिया था। उस पर से राक्षस और उनके गुलाम आया जाया करते थे। जब कभी महाकलि किला छोड़कर जाना चाहता, तो उसी रास्ते हाथियों के रथ पर वह जंगल में टहलने के लिए जाया करता।

केवल दुपहर के समय ही, पाताल दुर्ग पर सूर्य की किरणें सीधे पड़ा करतीं, प्रातःकाल और सायंकाल जब वन में सूर्य की किरणें चमका करतीं तो पाताल दुर्ग

27
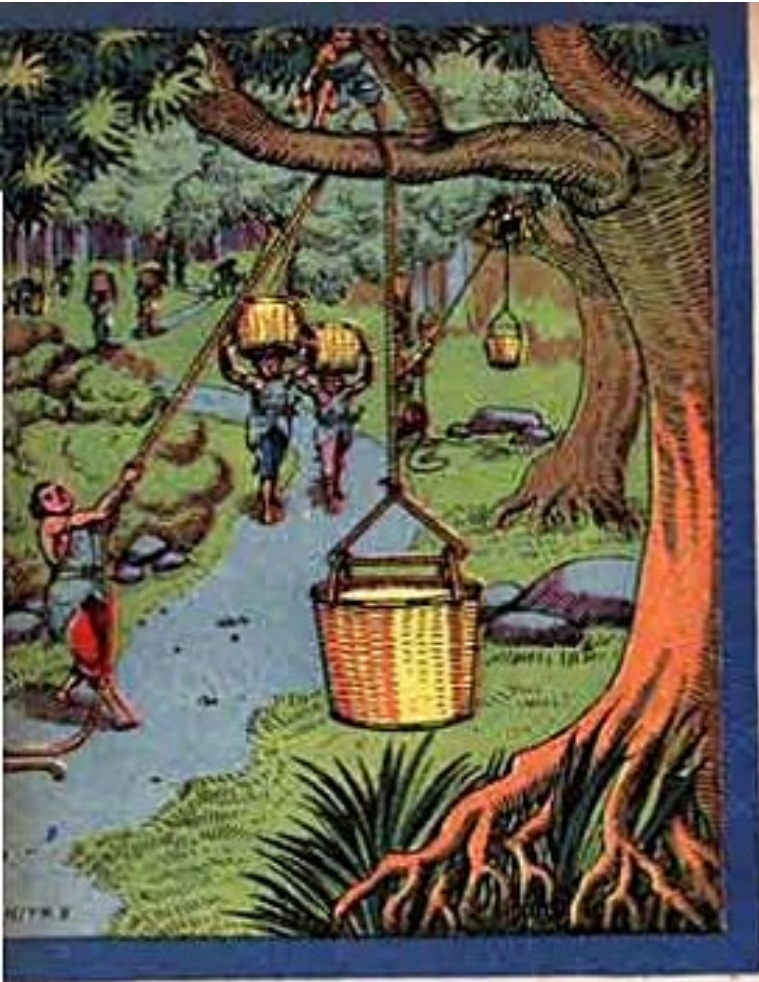
साथ महाकलि जबर्दस्ती विवाह करने की सोच रहा था, समय आने पर कुम्भीर ने पर्वत के अन्दर के गुप्त निवास में पहुँचाने का वचन दिया।

कालशम्बर, बदले में, महाकलि और उसके बन्धुओं को समाप्त करने के बाद, पाताल दुर्ग कुम्भीर को देने के लिए मान गया।

मान्त्रिक ने, जब वह सरोवर से सोने का मगर ला रहा था, धूमक और सोमक से बहुत-सी बातें कही, पर वह कैसे महाकलि का खात्मा करने जा रहा था, उसने यह नहीं बताया। "अभी कुछ और देर तक उस सब को गोपनीय ही रखना होगा।" उसने कहा।

पर यह गोपनीय बात क्या थी, धूमक सोमक और विरूप कुछ कुछ जान गये। वे जब मान्त्रिक के साथ आ रहे थे, तो कई लोग बड़े बड़े टोकरे सिर पर रखकर आते हुए दिखाई दिये। एक दो जगह उन्होंने उन टोकरियों को बड़े बड़े पेड़ों पर चढ़ाते देखा।

में अन्धेरा रहता। उस समय राक्षस बड़े बड़े लक्कड़ जलाकर उनकी रोशनी में अपना काम काज किया करते।

राक्षसों के संहार के लिए कालशम्बर मान्त्रिक बहुत दिनों से तैयारियाँ कर रहा था। वह यह देख बड़ा खुश था कि उसकी तैय्यारियों के सफल होने का समय अब आ गया था।

अब पाताल दुर्ग के राक्षसों में, कुम्भीर के साथी उसकी ओर आ गये थे। महाकली के जेल में पड़े मन्त्री के लड़के शशिकान्त और कान्तिसेना को, जिसके

वे जब गुफा की सीढ़ियों के पास पहुँचे तो उनको भद्र दिखाई दिया। उसने

कालशम्बर मान्त्रिक से कहा—"करीब करीब सभी तैयारियाँ पूरी हो गयीं हैं औषधियों और भस्मों को पेड़ों पर चढ़ा दिया गया है। सूर्योदय होते ही, हवा के अनुकूल होने पर उनका थोड़ी थोड़ी मात्रा में पाताल दुर्ग के राक्षसों पर उपयोग किया जायेगा।

"अच्छा है! राक्षस यूँहि शराबी होते हैं। उस मस्ती में अगर हमारी औषधियाँ जा मिलीं तो वे दुनियाँ ही भूल जायेंगे। उसके बाद, पानी, पत्थर, बाण और जंगली जानवर उन्हें यम के पास चलता करेंगे। महाकलि के पास कैद हमारे साथियों को लेकर, सूर्योदय के समय निकलकर सरोवर के पास पहुँचना होगा। यदि वह यह बात भूल गया, तो वह भी और राक्षसों के साथ और हमारे मित्र भी मेरी मन्त्र शक्ति के शिकार हो जायेंगे।" कालशम्बर ने कहा।

भद्र ने सिर नीचा करके कुछ देर तक सोचा। "महामान्त्रिक...मैं इस बारे में थोड़ी-सी सावधानी बरतना चाहता हूँ। कुम्भीर के पास खबर भिजवाता हूँ कि वह अभी ही शशिकान्त और कान्तिसेना को, सरोवर के पास ले आये।" भद्र ने कहा।

यह सुन मान्त्रिक ने बड़ी आँखें करके कहा—"तुम अपने मित्रों की रक्षा करते मेरी चाल ही बिगाड़ देना चाहते हो। जिस आदमी को तुम उस राक्षस के पास भेज रहे हो, अगर उसे महाकलि के नौकरों ने देख लिया, तो कितनी बड़ी आफ़त आ पड़ेगी। क्या यह तुम जानते हो? अगर उन्होंने उसको पकड़ लिया, तो देखते देखते, हमारे सारे भेद खुल जायेंगे। इसलिए कुछ मुख्य बातों को

अभी तक मैं सब से छुपाये हुए हूँ। तुम कुम्भीर के पास किसी को न भेजो।"

भद्र ने स्वीकृति में सिर हिलाया। और चला गया। मान्त्रिक ने विरूप की ओर मुड़कर पूछा—"तुम्हारा गरुड़ मनुष्यों से खूब हिल गया है न? सोने के मगर से उसका मेल बिठाना होगा। राक्षसों के अन्ध विश्वासों का, जहाँ तक सम्भव हो, हमें लाभ उठाना होगा और उनका सर्वनाश करना होगा।"

विरूप ने गरुड़ को मान्त्रिक के हाथ में देते हुए कहा—"यह कोई देवता पक्षी है। इसे मनुष्यों से अधिक ज्ञान है। उजड़े मन्दिर के पास, वन मानस को एक चोट से ही इसने नीचे गिरा दिया था। विश्वास करो।"

मान्त्रिक ने गरुड़ पक्षी को लेकर नीचे रखा और उसके पास सोने के मगर के बच्चे को धकेला।

गरुड़ ने पहिले तो उसे अपनी चोंच से मारना चाहा। परन्तु विरूप के रोकने पर सिर इधर उधर घुमाकर, वह की की करने लगा।

"शाबाश"...कहकर कालशम्बर ने गरुड़ के पैरों से लटकती रस्सी लेकर उसे सोने के मगर के बच्चे की कमर में बाँध दी। फिर उसने उन दोनों को खूब खिलाने के लिए कहा।

नीचे पाताल दुर्ग की तरफ धीमे धीमे शोर बढ़ता गया। राक्षस जगह जगह आग बनाकर, उसके चारों ओर नाचने गाचने लगे। कुछ नशे में आग में कूदकर, चिल्लाते चिल्लते इधर उधर भागने लगे। कालशंबर ने उनकी ओर देखकर खुशी में हँसकर कहा—"यह इन दुष्टों का आखिरी मजा है। हमारे लोग मन्त्रोंवाली भस्म,

30

दवा के सहारे उन पर छोड़ रहे हैं। देखा? किले के ऊपर जो सफेद धुंआ-सा दिखाई दे रहा है, वह सब वही है। वे उसके असर में, जल्दी ही होश हवाश खो बैठेंगे। महाकलि, अभी तक, वहाँ आया नहीं है। अगर उसपर मान लो औषधियों का असर न भी हुआ, तो जब सब उसके साथी मर मरा जायेंगे, तो मैं अपने मन्त्रदण्ड का उपयोग करके, उसको यूँ चुटकी भर में मार सकता हूँ।

मान्त्रिक ने इस प्रकार अपने साथियों से बातें करते, पाताल दुर्ग के राक्षसों के शोर को सुनते, कुछ समय बिताया। इतने में पूर्व में सूर्योदय होने लगा। कालशम्बर, जहाँ खड़ा था, वह स्थल सूर्य के प्रकाश में चमकने लगा। ताकि नीचे खड़े राक्षस उसे देख न लें, वह अपने साथियों के साथ झाड़ियों के पीछे जा छुपा और अपने नौकरों को दुर्ग पर अचूक भस्म को मुट्ठियों से फेंकता देखने लगा। "यह न सोचो कि वे राक्षस केवल शराब के नशे में ही आग में कूद फाँद रहे हैं। मेरी बनायी भस्में उन पर गिर रही हैं और उनको पागल बना रही

हैं। अभी थोड़ी देर में, वे पूरी तरह पागल हो जायेंगे।

कालशम्बर शेखियाँ नहीं मार रहा था। वे राक्षस, जो नाच-नाचकर गा-गाकर खुशियाँ मना रहे थे यकायक, एक दुसरे को बाणों से, गदाओं से पीटने मारने लगे। वे दो दलों में बँट गये और एक दूसरे को मारने लगे। जो, जिसको मिलता, वह उसे मारता।

पाताल दुर्ग के सामने का मैदान रणभूमि-सा लगने लगा। मान्त्रिक खुशी में चिल्लया—"शाम्भवी" वह मन्त्रदण्ड को

31

CHITRA

धूमक यूं सोच रहा था कि भद्र वहाँ दो साथियों को लेकर भागा भागा आया। "महामान्त्रिक! कुम्भीर, दुर्ग में हो हल्ला होता देख, अपने लोगों को लेकर, सरोबर की ओर निकल पड़ा है। अन्तिम क्षण में माया सिंगि हमारे मदद के बारे में कुछ बकने बकाने लगी होगी, इसलिए वह उसे कन्धे पर लादकर ला रहा है। यह खबर, पेड़ों पर चढ़े हमारे आदमियों से मिली है।"

"जय शाम्भवी! विजय हमारी ही है। अगर हम दस बारह मिनिट राक्षसों का ध्यान बँटा सकें, तो उनको मरा ही समझो विरूप। तुम अपने काले गरुड़ को राक्षसों पर छोड़ो। उसके पैरों में सोने के मगर को बाँध दिया है न?" मान्त्रिक ने कहा।

विरूप ने गरुड़ पक्षी के सिर को सहाला। फिर उसको दोनों हाथों से उठाकर, राक्षसों के मैदान की ओर छोड़ दिया, वह 'कीं कीं' करता उन पर उड़ने लगा। उसके पैरों में बँधा मगर का बच्चा, तड़पता, छटपटाता सूर्य की रोशनी में दिखाई दिया। जिस किसी राक्षस ने पक्षी को देखा, वह हाथ उठाकर, उसको प्रणाम करने लगा। "महाकलि प्रभु के पिता, घोरकलि अपनी सौवीं वर्षगांठ पर स्वयं आ रहे हैं।" वे चिल्ला चिल्लाकर, ज़मीन पर गिरकर साष्टाङ्ग करने लगे।

यह दृश्य देख कालशम्बर मान्त्रिक बड़ा खुश हुआ। "सरोवर के पास पेड़ के तनों से बेलों को पानी में बाहर निकालो। उसके साथ एक पत्थर आयेगा। अपने लोगों को गुफाओं में से पहाड़ पर आने के लिए कहो।" उसने अपने अनुचरों को आज्ञा दी। (अभी है)

वेताल कथाएँ

तब तक वह दिन रात पशुओं के बाड़े में ही काटता, चूँकि उस ईलाके में चोर डाकुओं का भय था।

एक दिन शिवकाम खाट पर सोने को ही था कि पहाड़ के पास आहट सुनाई दी। जब बाहर आकर उसने देखा, तो अन्धेरे में किसी को पहाड़ की ओर भागते पाया। वह लाठी लेकर, पहाड़ की ओर पगडंडी से गया।

जब रास्ता मुड़ा तो उसे सामने एक घर दिखाई दिया। घर के अन्दर रोशनी हो रही थी। उस घर को देखकर शिवकाम हैरान रह गया। चूँकि वहाँ पहिले कोई घर न था।

यह जानने के लिए वहाँ कौन था, वह घर के पास गया। उसने पैर अन्दर रखा। घर नया भी न लगता था। बड़ा था। अन्दर चान्दी और लकड़ी की चीज़ें भी थीं। एक अधेड़ पुरुष और स्त्री भी थे। एक जवान लड़की ने तिरछी नज़र से शिवकाम को देखा भी।

वह वहाँ खड़ा ही था कि उस लड़की ने बड़ों से कहा—"परोस दिया है। भोजन के लिए उठो।"

अधेड़ ने शिवकाम की ओर मुड़कर कहा—"तुम भी भाई आओ भोजन के लिए।"

शिवकाम पहिले ही जो कुछ देख रहा था, उसके कारण चकित था, पर जब उन्होंने भोजन के लिए उसे बुलाया तो उसने सोचा कि इसमें कोई चाल भी हो सकती है।

उसको आगा पीछा करता देख, अधेड़ ने कहा—"घबराओ मत। तुम पर कोई आफ़त नहीं आयेगी। जैसे आये हो, वैसे ही चले जाओगे।"

पर शिवकाम इतना डर गया था कि उसके मुख से बात तक न निकली। उसकी आँखें उस लड़की पर ही गड़ी हुई थीं। उतनी सुन्दर स्त्री की कल्पना उसने स्वप्न में भी न की थी। वह ताड़ गया कि वह भी उसे रह रहकर देख रही थी।

इतने में उसे लगा, जैसे उसका सिर चकरा रहा हो। जब उसने आँखें मूँदकर फिर खोलीं, तो दृश्य बदल गया था। वह अपने पशुओं के बाड़े में ही था। सामने पहाड़ था और चारों ओर अन्धेरा था। न कोई घर था, न कुछ और ही। सिर उठाकर जो देखा, तो जो तारे आकाश के बीचों बीच होने चाहिए थे, वे पश्चिम की ओर आ गये थे। यानि उसे पशुओं के छप्पर से निकले काफ़ी समय हो गया था।

इस घटना के बारे में सोचते सोचते वह खाट पर लेट गया और खूब सोया। परन्तु अगले दिन से वह बिल्कुल बदल गया। पिछली रात को उसने जिस लड़की की शक्ल देखी थी, वह उसकी आँखों में मानों जम-सी गई थी। चाहे वह कोई भी काम करता, परन्तु उस लड़की को न भूल पाता। वह पगलाया-सा पहाड़ों में घूमता। उसे न वह घर दिखाई दिया, न उसके माँ-बाप ही न वह लड़की ही। वह खोया खोया-सा रहता। सूख-सा गया।

एक साल हो गया। फिर कटाई के दिन आये। शिवकाम पशुओं के बाड़े में फिर रात दिन गुज़ारने लगा। एक दिन रात को, उसने बाड़े से बाहर पैर रखा ही था कि उसने अपने को पुराने घर में पाया। वह अधेड़, वह स्त्री, वह लड़की सब पहिले की तरह थे। उस लड़की को

अपनी स्त्री के साथ मामूली स्त्री की तरह व्यवहार करके अपनी नीयत ही दिखाई थी, परन्तु केतकी ने असाधारण शक्ति और सामर्थ्य होते हुए भी वह सब क्यों सहा! उसने मामूली स्त्री की तरह क्यों सहिष्णुता दिखाई! यदि तुमने जान बूझकर इन सन्देहों का निवारण न किया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"केतकी के उस व्यवहार के बहुत-से कारण थे। एक, वह देवी थी, पर एक पुरुष से प्रेम करके, उससे विवाह किया था उसने। उसके लिए उसने मानव स्त्री का रूप लिया। उस हालत में मामूली स्त्री की तरह रहना ही उचित था। बात बात पर पति को अपनी असाधारण शक्ति दिखाना ठीक न था। दूसरी बात यह.... चूँकि वह मानव स्त्री नहीं थी, इसलिए जो बातें मामूली स्त्रियों को बुरी लगती हैं, हो सकता है, उसे न लगी हों। बलहीन से बलवान को हमेशा अधिक सहिष्णुता होती है। तीसरी बात, जो बल केतकी ने बैल पर दिखाया था, अगर वह बल पति पर दिखाती तो वह भोंदू अपाहिज-सा हो जाता। इससे केतकी का कुटुम्ब सुखी न होता। इसलिए केतकी अपने पति को अपनी शक्ति दिखाने के लिए मौका मिलने तक सब कुछ सहती रही। जो कुछ सबक वह सिखाना चाहती थी, बिना स्वयं सिखाये उसे स्वयं उसने सीखने दिया।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही वेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

वक्त की करामात

कभी उज्जैन में कुम्भीराम नाम का एक बड़ा गरीब रहा करता था। वह जंगल से घास काट लाता और उसे रईसों के घोड़ों के लिए बेच देता और जो कुछ रुपया मिलता उससे गुजारा किया करता। उसका घर नगर के एक सिरे पर था। रोज वह ढ़ाई आने कमाता। दो आने का कुछ खा पी लेता और आधा आना बचा लिया करता। उसके न कोई पत्नी थी, न बाल बच्चे थे। न कोई भाई बन्धु ही।

एक दिन रात को कुम्भीर ने घड़े में बचाकर रखे आनों को फर्श पर डाल दिया। उनका ढ़ेर-सा लग गया। उसने सोचा—"इतने सारे पैसे का मैं क्या करूँगा?" उसकी कोई इच्छा न थी, जिसे वह पैसा खर्च करके पूरी करता। वह आखिर अपने झोपड़े के छप्पर के बदले खपरैल भी नहीं लगवाना चाहता था।

उसे सवेरे के समय उठने से पहिले सपने में एक युवती दिखाई दी। उठने के बाद भी कुम्भीराम की आँखों में उस स्त्री की आकृति ही दिखाई दे रही थी। उसे पता लग गया कि उसको कैसे अपने पैसे का उपयोग करना था। वह अपना सारा पैसा एक थैले में डालकर, नगर के एक प्रख्यात जौहरी के पास गया। उसने अधन्नियों को जौहरी के सामने डालकर कहा—"जी, मैंने जिन्दगी भर इनको जमा किया है। इन सब को लेकर मेरे लिए एक अच्छा गहना बना दो।"

युधिष्ठिर

व्यापारी काफिले के साथ निकल पड़ा। रास्ते में जगह जगह व्यापार करता, पड़ाव करता, कुछ सप्ताहों में, सागोरपुर पहुँचा। वहाँ उसने राजकुमारी के दर्शन करके कहा—"इसे एक व्यक्ति ने आपको उपहार में देने के लिए कहा है।" कहकर उसने कंकण दे दिया।

उसने उस कंकण को अपने हाथ में लगाकर कहा—"यह मेरे हाथ पर बहुत फब रहा है। बताओ, इसे किसने मुझे दिया है?"

"माफ कीजिये। मैं उस व्यक्ति का नाम नहीं बता सकता।" व्यापारी ने कहा।

राजकुमारी बड़ी चकित हुई। "खैर उसने किस प्रत्युपकार की आशा में यह उपहार भेजा है?"

"वह कुछ नहीं चाहता है। वह केवल यह ही चाहता है कि आप इस कंकण को स्वीकार कर लें।" व्यापारी ने कहा।

"वह भले ही न चाहता हो, पर मेरा कुछ न देना अच्छा नहीं है।" राजकुमारी

ने व्यापारी को सुन्दर वस्त्र, ढेर से रेशमी कपड़े और कुछ रुपया दिया।

कुछ मास बाद, व्यापारी फिर उज्जैन नगर वापिस चला आया। "राजकुमारी ने तेरा कंकण ले लिया और उसके बदले इतने सारे कपड़े और रेशमी कपड़े भेजे हैं।" उसने कुम्भीराम को बताया।

कुम्भीराम चकित हो उठा। "मैं इन रेशमी कपड़ों का क्या करूँगा? क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं, जो इनके योग्य है।" उसने पूछा।

"क्यों नहीं है? दक्षिण के विदर्भ देश में एक राजा है। सुना है वह बड़ा सुन्दर है, और बड़ा लोकप्रिय है।" व्यापारी ने कहा।

"यदि यही बात है, तो जब आप व्यापार पर उस तरफ़ जायें, तो इन रेशमी कपड़ों को उस राजकुमार के पास पहुँचा सकेंगे?" कुम्भीराम ने पूछा।

कुछ समय बाद, व्यापारी ने उन रेशमी कपड़ों को विदर्भ के राजकुमार के पास पहुँचाया। वह भी युवक था। उसने भी सागोर राजकुमारी की तरह पूछा—"इन्हें किसने मेरे पास भेजा है? वह क्या चाहता है? परन्तु व्यापारी ने कुम्भीराम का नाम नहीं बताया। पर इतना जरूर बताया कि उसे कोई इच्छा न थी। फिर भी राजकुमार ने बारह अच्छी नस्ल के घोड़ों को व्यापारी को देकर कहा—"जिसने मुझे रेशमी कपड़े उपहार में भेजे हैं, उन्हें इन घोड़ों को, मेरी तरफ़ से दे दीजिये।"

इन घोड़ों को देखकर कुम्भीराम फिर एक और समस्या में पड़ गया। आखिर उसने व्यापारी से कहा—"इनमें से दो,

आप अपने ही पास रख लीजिये। बाकी जब आपको समय मिले, सागोर राजकुमारी को दे दीजिये।"

जब व्यापारी ने घोड़े लाकर राजकुमारी को दिये, तो उसको एक अपरिचित व्यक्ति से उपहार लेते हुए संकोच हुआ। "अगर कोई इस तरह उपहार देता जाये, तो उनको कैसे स्वीकार किया जाये? कम से कम यह तो मालूम हो कि वह कौन है?"

"मैं केवल उस व्यक्ति के बारे में इतना ही कह सकता हूँ कि वह कोई ऐसी चीज़ नहीं दे रहा है, जो वह नहीं दे सकता है। इससे अधिक मुझ से कुछ नहीं माँगिये।" व्यापारी ने कहा।

राजकुमारी ने अपने पिता की सलाह ली। "एक ही बार कोई बड़ा-सा उपहार भेज दो। तब वह कोई छोटा उपहार न भेज सकेगा और उपहार भेजना ही बन्द कर देगा।" राजा ने कहा।

राजकुमारी ने इतनी चान्दी दी कि उनको ढोने के लिए बीस ऊँटों की जरूरत पड़ती। व्यापारी ने उसे ले जाकर कुम्भीराम को दिया। कुम्भीराम उसे देख घबरा गया।

"मैं इनका क्या करूँगा। इनमें से छः ऊँटों और उन पर लदी चान्दी को आप ही ले लीजिये और इसके प्रत्युपकार के रूप में यदि आपने बाकी ऊँटों को राजकुमार के पास पहुँचा दिये, तो मैं आपका एहसान कभी न भूलूँगा।"

व्यापारी ने अपना निजी काम छोड़ दिया। ऊँटों को हाँककर वह विदर्भ गया और राजकुमार को उन्हें भेंट के रूप में दिया। सागोर राजकुमारी की तरह विदर्भ का राजकुमार भी अपरिचित व्यक्ति से भेंट लेने में हिचका और एक बड़ा उपहार
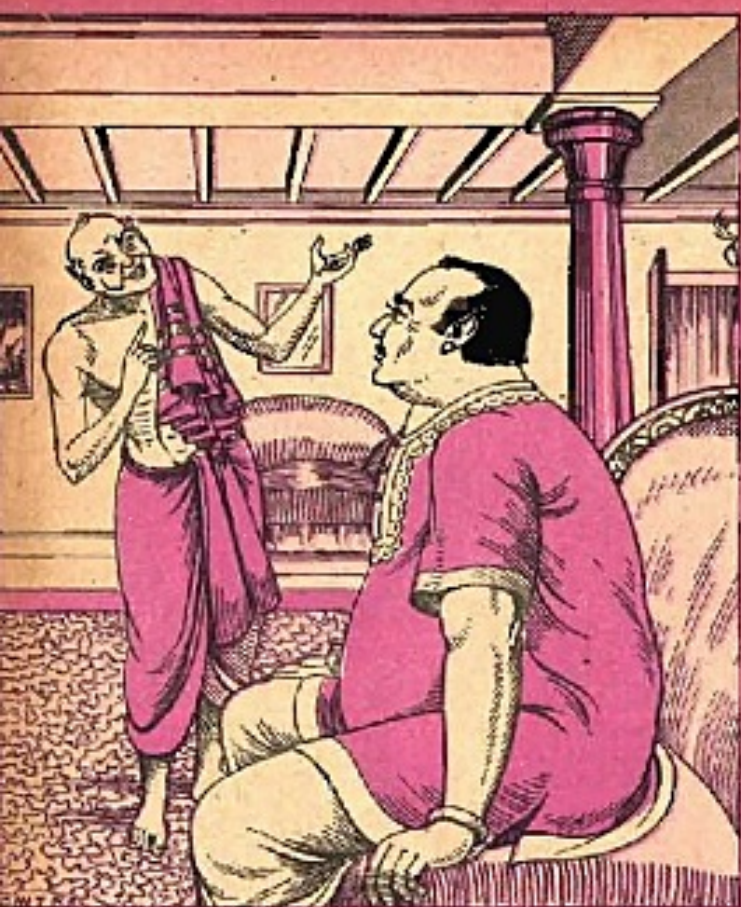
भेजकर उसने यह सारा मामला की खतम कर देना चाहा। उसने व्यापारी को बीस अच्छे घोड़े, बीस अच्छे ऊँट और बीस हाथी दिये। हाथियों पर मोती जड़ी अम्बारियाँ थीं। घोड़ों पर चान्दी की लगामें लगी हुई थीं। साठ पर रेशमी शाल थे।

जब इन सब को लेकर व्यापारी कुम्भीराम के पास गया तो उसकी अक्ल ही जाती रही।

"हुज़ूर, आपने मेरे लिए पहिले ही बहुत किया है। इनमें से दो घोड़े, दो ऊँट, दो हाथी आप रख लीजिये। बाकी राजकुमारी को दे दीजिये।" उसने व्यापारी से कहा।

"इन सबको तुम ही रख लो। जो कुछ मैंने किया है, उसके लिए मुझे कोई पछतावा नहीं है। उसके लिए मुझे प्रतिफल भी मिल गया। परन्तु फिर एक बार सागोर राजा और राजकुमारी के सामने हाज़िर होने की मुझ में हिम्मत नहीं है। बिना यह जाने कि इन उपहारों को कौन भेज रहे थे उन्होंने पिछली बार ही आनाकानी की थी इस बार भी साफ़ साफ़ पूछेंगे। क्या यह कह दूँ कि हमारे शहर में घास बेचकर गुज़ारा करनेवाला कुम्भीराम ये भेज रहा है अगर तुम इसके लिए मान गये तो मैं सागोरपुर जाऊँगा।" व्यापारी ने कहा।

कुम्भीराम काफ़ी देर तक कुछ सोचता सोचता सिर खुजलाता रहा। "क्या इस प्रकार कहा जाय? क्या आप नहीं जानते कि ये घोड़े, ऊँट और हाथी किसने दिये हैं? कह दीजिये कि ये उनके हैं। उसके बाद न आपको काम रहेगा न मुझे ही।"

कुम्भीराम का मतलब व्यापारी जान गया। उस बूढ़े ने जितने जानवर उसको

दिये थे, उनको उसने अपने पास रख लिया और बाकी लेकर वह सागोरपुर पहुँचा। सागोर राजा ने अपने महल से दूरी पर धूल उड़ते देखा। घोड़ों का हिनहिनाना, हाथियों का चिल्लाना सुन, उसने सोचा कि कोई राजा उसके राज्य पर आक्रमण करने आ रहा था, पर जब उसको व्यापारी ने बताया कि वे सब उसकी लड़की के लिए उपहार थे, तो उसे आश्चर्य हुआ।

"जब तक तुम यह नहीं बताओगे कि इन्हें कौन भेज रहा है, तब तक हम स्वीकार नहीं करेंगे।" उसने व्यापारी से कहा।

"महाराज, अब मैं भी सच छुपाये नहीं रख सकता। जो जन्तु मैं लाया हूँ, उनको विदर्भ के राजा ने भेजे हैं।" व्यापारी ने कहा।

राजा ने अपनी लड़की से बातचीत की। "विदर्भ का राजा तुम से शादी करना चाहता है। अगर उसने दूत भेजा और अगर हमने उसे ठुकरा दिया, तो उसकी शान में धब्बा आयेगा, यह सोचकर उसने यह चाल चली है। विदर्भ राजकुमार तुम से शादी करे, इससे अच्छी बात

हमारे लिए कौन-सी हो सकती है!" यह सुन राजकुमारी भी बड़ी खुश हुई।

राजा ने व्यापारी को बहुत से उपहार देकर कहा—"अब तुम जा सकते हो! विदर्भ राजकुमार को इस बार हम स्वयं ही उपहार भेज लेंगे।"

व्यापारी ने कहा—"बहुत अच्छा, मैं भी यही चाहता हूँ।" वह राजा से विदा लेकर उज्जैन वापिस चला आया।

फिर सागोर राजा, अपनी लड़की और परिवार को लेकर तीर्थयात्रा के बहाने निकला, कई जगह पड़ाव करके वे विदर्भ

पहुँचे। वह अपनी लड़की को लेकर विदर्भ राजा के पास पहुँचा। उसने उससे कहा—"आपके लड़के ने हमारी लड़की के लिए जो उपहार भेजे हैं, हम उनके लिए बड़े कृतज्ञ हैं। हमने यह बिना जाने कि वे किस लिए भेजे जा रहे थे, यथाशक्ति प्रत्युपहार भेजे। पर पिछली बार जो उपहार मिले तो हमने सोचा कि वे राजकुमार से ही मिले हैं और वे जो चाहें, वह हमारी शक्ति के बाहर न हो, तो हम जाकर स्वयं समर्पित कर दें।"

विदर्भ राजा यह सब न समझ सका। पर उसने कुछ व्यक्त नहीं किया। "मैं लड़के को बुलाता हूँ। आप स्वयं बात कर लीजिये।" उसने कहा।

विदर्भ का राजकुमार आया। सागोर राजकुमारी के सौन्दर्य को देखकर वह दंग रह गया। उसकी बातों से उसने अनुमान कर लिया कि उसने ही उसको उपहार भेजे थे। यह सोच कि उसने शादी करने के उद्देश्य से ही वे उपहार भेजे थे। उसने कहा—"मैं आपकी लड़की से शादी करना चाहता हूँ। यदि आपने उसका मेरे साथ विवाह किया, तो वह सब से बड़ा उपहार होगा।"

उनके विवाह को बड़ों ने भी स्वीकार किया। ज्योतिषियों ने तुरत मुहूर्त निश्चित किया। जल्दी ही दोनों का विवाह हो गया। उनके विवाह का कारण, कुम्भीराम कौन था, यह वे दोनों ही नहीं जानते थे। वह पहिले की तरह रोज़ जंगल जाता, घास काटता, गट्ठर बाँधकर उसे लाता, घोड़ेवाले रईसों को उसे ढ़ाई आने में बेचता, दो आने का कुछ खा पी लेता और अधन्नी बचा लेता।

सन्देह वाला भूत

कोशल देश के राजा के दो लड़के थे, एक का नाम सुनन्द था और दूसरे का जीवक। यद्यपि दोनों ही उसके लड़के थे पर बड़े लड़के पर राजा को ज्यादह प्रेम था। इसका कारण यह था कि सुनन्द उसके बाद राजा होने जा रहा था। यही नहीं, अस्त्र विद्या में जीवक की अपेक्षा सुनन्द ही अधिक प्रवीण था।

परन्तु जीवक को अपने पिता पर अत्यधिक प्रेम और अभिमान था। वह सब तरह से बड़ा योग्य था।

कोशल देश के प्रधान मन्त्री की वासन्तिका नाम की लड़की थी। दोनों राजकुमार उससे हिल मिलकर रहा करते और जब उसकी विवाह के योग्य अवस्था हुई, तो दोनों ने उससे विवाह करना चाहा।

"वासन्तिका तुम दोनों से कैसे विवाह कर सकती है? कोई समझौता कर लो।" राजा और मन्त्री ने दोनों राजकुमारों को समझाया। पर उन्होंने सुना नहीं। किसी ने भी अपनी जिद न छोड़ी।

तब राजा ने दोनों में एक प्रतियोगिता रखने की सोची। राजमहल से दोनों भाइयों को एक एक बाण छोड़ना था, जिसका बाण ज्यादह दूर पड़ता वह वासन्तिका से विवाह कर सकता था।

राजा ने जब यह परीक्षा घोषित की, तभी जीवक जान गया कि उसे वासन्तिका नहीं मिलेगी। फिर भी उसने प्रतियोगिता में भाग लिया।

सुनन्द ने राजमहल से पहिला बाण छोड़ा, वह बहुत दूर जाकर नीचे गिरा।

50

फिर जीवक ने भी बाण छोड़ा। परन्तु कोई नहीं देख पाया कि वह कितनी दूर गया था और कहाँ गिरा था। सैनिकों ने दूर दूर तक उस बाण को खोजा। पर वह कहीं मिला नहीं।

"हो सकता है कि जीवक का बाण अधिक दूर गया हो, पर इसका कोई प्रमाण न था। इसलिए हम सुनन्द को ही विजयी घोषित करते हैं और वासन्तिका से विवाह करने का अधिकारी समझते हैं।" राजा ने प्रकट किया। विवाह के साथ राजा ने

उसको युवराज भी घोषित करने का निश्चय किया।

इस सिलसिले में जितना कि और खुश हुए थे, जीवक खुश नहीं हुआ था। उसने जानने का संकल्प किया कि उसके बाण का क्या हुआ था, इसलिए वह शादी देखने के लिए भी न रुका। राजमहल छोड़कर वह सीधे उस ओर गया, जिस तरफ़ उसने बाण फेंका था।

वह अपने बाण को खोजता खोजता सोलह मील चलने के बाद एक पर्वत प्रान्त में पहुँचा। एक सीधे पहाड़ के पास उसने एक बाण पड़ा देखा। वह उसका ही बाण था, पर उसका आगे का सिरा उसी की ओर ही मुड़ा हुआ था।

"इसमें जरूर कोई माया है, मैं सोलह मील बाण नहीं छोड़ सकता, मैं क्या, देवता भी नहीं छोड़ सकते। यही नहीं, अगर यह बाण यहाँ आकर लगा भी हो, तो अगला सिरा सामने होना चाहिए, पीछे नहीं। इसलिए यदि यह बाण यहाँ तक पहुँचा है, तो इसका कुछ और कारण है।" जीवक ने सोचा।

शायद कहीं कोई दीखे, यह सोचकर वह पहाड़ के साथ साथ चल पड़ा। कुछ दूर जाने के बाद उसे एक गुफा दिखाई दी। जीवक धैर्य करके गुफा में घुसा। अन्दर थोड़ी दूर जाते ही, उसे एक दरवाजा-सा दिखाई दिया। जब उसे खटखटाया, तो वह एक तरफ हट गया।

जीवक दरवाजा पार करके जब अन्दर गया, तो आश्चर्य से स्तब्ध खड़ा रह गया। पहाड़ के अन्दर बड़ा विशाल प्राँगण था, उसमें एक बड़ा नगर और रत्न जड़े चमचमाते भवन थे। इन भवनों के बीच में विशाल मार्ग था और मार्ग के अन्त में एक भव्य राजप्रासाद था।

जीवक उस रास्ते अन्दर गया, राजप्रासाद पहुँचा। उसके अन्दर कदम रखा। अन्दर एक बड़ा हाल था। उसमें सोने के आसन थे। अप्सराओं को भी मात करनेवाली स्त्रियाँ थीं। उन स्त्रियों में, जो रानी-सी लगती थी, उसने आगे आकर कहा—"आओ जीवक, तुम्हारा स्वागत है।"

जीवक को और भी आश्चर्य हुआ—"तुम कौन हो? तुम्हें कैसे मेरा नाम

इस प्रान्त में ला डाल दिया और मैं इस प्रतीक्षा में थी कि तुम कब बाण को खोजते हुए आओगे। अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो, तो मेरे साथ विवाह करो और यहाँ के अनन्त भोगों का आनन्द करो।" यक्षणी ने कहा।

जीवक को विश्वास न हुआ। सचमुच यह शम्पालता यक्षिणी ही नहीं, वासन्तिका से हज़ार गुना सुन्दर थी। यह कल्पना करना भी सम्भव न था कि कोई उससे विवाह न करना चाहेगा।

मालूम हुआ! हमारी राजधानी के इतने पास, बिना किसी को मालूम हुए कैसे तुम सब रह रही हो?" जीवक ने उससे पूछा।

"मैं यक्षेश्वर की लड़की हूँ। मेरा नाम शम्पालता है। मेरे पिता ने इस नगर को मेरे लिए बहुत पहिले ही बनाया था, मैं तुम्हारे बारे में पहिले से ही जानती हूँ। सच कहा जाय, तो वह वासन्तिका तुम्हारी पत्नी होने लायक नहीं है। तुम अपने भाई से कहीं अधिक भाग्यशाली हो। इसलिए जब तुमने बाण छोड़ा, तो मैंने अपने विद्या कौशल से उसे

"तुम्हारी इच्छा, जैसा तुम कहोगे, वैसा करूँगा। मैं पहिले से ही तुम्हारे आधीन हूँ। यदि मेरा सारा जीवन इसी प्रकार कट जाये, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" जीवक ने कहा।

उसने उसके साथ सारा राजमहल देखा, जहाँ देखो, वहाँ सोना और रत्नों के सिवाय कुछ न था। अलकापुरी भी उससे अधिक सुन्दर नहीं हो सकती थी।

दोनों विवाह करके सुख से रहने लगे। जो सुख औरों के लिए स्वप्न में सम्भव न था, वह वह प्रत्यक्ष अनुभव कर रहा था।

एक मास बीता। जीवक को अपना पिता और और लोग याद आने लगे। वह विरक्त-सा होकर घर छोड़कर चला आया था। उस समय उसने यह भी न सोचा था कि उसके न दिखाई देने पर, उसके लोग दुखी होंगे। चूँकि सब विवाह के कार्यों में और पट्टाभिषेक के कार्य में मग्न थे जीवक कहाँ चला गया था, यह वे तुरत जान भी न सके। पर जानने पर कितनी दुखी हुए होंगे, यह बात अब उसको सताने लगी।

यक्षिणी ने उसको दुखी देख, उसके दुख का कारण पूछा।

"मैं घर से बिना किसी को बताये चला आया हूँ। मैं उनके पास जाकर, दो तीन दिन वहाँ काटकर आना चाहता हूँ।"

"जरूर जाओ। तुम्हारी यात्रा के लिए अवश्यक प्रबन्ध मैं किये देती हूँ। परन्तु एक शर्त है। तुम किसी भी हालत में मेरे बारे में या हमारे इस निवास के बारे में किसी को कुछ न मालूम होने दो।" शम्पालता ने कहा।

जीवक इसके लिए मान गया। उसकी यात्रा के लिए शम्पालता ने बड़े पैमाने पर प्रबन्ध किये। उसके लिए रत्नों से जड़ा रथ, उसे खींचने के लिए दिव्य अश्व और अश्वारोही, उसके बन्धुओं के लिए सब रत्न आभरण और सुवर्ण वस्त्र तैयार कर दिये गये।

उस लड़के को, जो बिना कहे चला गया था, फिर वापिस आया देख, राजा बड़ा खुश हुआ। मगर मन्त्री और अन्य दरबारी खुश न हुए। उन्होंने सन्देह किया कि वह पिता के और भाई के विरुद्ध कोई राजकीय विद्रोह उकसाने के लिए ही वापिस आया था।

जीवक ने अपने पिता से कहा कि वह सुख से रह रहा था, पर कहाँ रह रहा था, उसने यह न बताया। यह भी नहीं बताया कि उसने एक यक्षिणी से विवाह कर लिया था। पिता के बहुत कहने पर भी वह न रहा। दो दिन बाद अपने आदमियों के साथ निकल पड़ा और जाते जाते पिता को वचन देता गया कि कभी कभी वह उसे देखने आता रहेगा।

जीवक के चले जाने के बाद, मन्त्री आदियों ने राजा को खबरदार कियां कि जीवक कोशल राज्य को हड़पने के लिए छुपे छुपे प्रयत्न कर रहा था और कई शक्तिशाली लोग उसकी मदद कर रहे थे।

यह सन्देह का भूत राजा की बुद्धि में भी घुसा। मन्त्री आदियों का सन्देह ठीक ही होगा, चूँकि वह मन्त्री की लड़की से स्वयं शादी न कर पाया था और जो भाई की शादी में भी न आया था, रूठकर चला गया था, क्या वैसा जीवक केवल प्रेमवश देखने के लिए ही आयेगा? उसके पास यह सब ऐश्वर्य कहाँ से आया? ये नौकर चाकर किस राजा ने दिये? सच कहा जाये तो जीवक कहाँ से आया था, और कहाँ चला गया था, किसी को न मालूम था। उसने भी न बताया था। वह यहाँ की परिस्थिति जानने के लिए ही आया था। अक्सर आने का वचन भी शायद इसीलिए ही दिया था, राजा ने सोचा।

एक और महीना बीत गया। इस बार जीवक और वैभवपूर्वक, और भी अधिक लोगों के साथ पिता को देखने आया। तब पिता ने कहा—"बेटा, तुम्हारा इस प्रकार अक्सर आना मुझे पसन्द है। पर तुम यहाँ ही क्यों नहीं रह जाते? यहाँ तुम्हें किस चीज़ की कमी है?

"यह सम्भव नहीं है। मैने अपना जीवन एक और जगह शुरु कर दिया है। मेरे सुख और सन्तोष का वह ही आश्रय है।" जीवक ने कहा।

"वह स्थल कहाँ है? जैसे तुम यहाँ आ जा रहे हो, क्या हम भी वहाँ आ जा सकते हैं?" राजा ने पूछा।

"बस, यह न पूछिये। मैं जहाँ हूँ, उसके बारे में मुझे किसी से नहीं कहना चाहिए। यह मेरा रहस्य है। और आप में से किसी को भी वहाँ नहीं आना चाहिए।" जीवक ने कहा।

राजा का सन्देह और पक्का हो गया। जीवक के चले जाने के बाद, उनने मन्त्री आदि से सलाह मशवरा किया। उन्होंने सलाह दी कि जीवक के रहने की जगह के बारे में मालूम करना बिल्कुल जरूरी था।

एक और महीने बाद, जीवक फिर पिता को देखने आया। इस बार उसके साथ और भी अधिक लोग थे।

"यह हर बार बड़ी सेना के साथ आ रहा है। एक बार वह आयेगा और सारा राज्य हड़प लेगा...." राजा ने सोचा।

जीवक जब वापिस जाने लगा तो राजा ने यह देखने के लिए एक दूत भेजा कि वह कहाँ जा रहा था। यह दूत, जीवक के आदमियों के कुछ दूर पीछे पीछे चलते चलते, पहाड़ तक आया। उसके देखते देखते जीवक के लोग, पहाड़ में समा गये और अदृश्य हो गये। जहाँ वे अदृश्य हुए थे, वहाँ जाकर उसने देखा, पर उसे वहाँ न कोई द्वार दिखाई दिया, न कोई गुफा ही। इसका कारण यह था कि वहाँ की गुफा सब को नहीं दिखाई देती थी, वह उनको ही दिखाई

कि हम और भी सावधान रहें।" मन्त्री ने कहा।

"कैसे यह मालूम होगा कि जीवक के पीछे दैवीय शक्तियाँ हैं, या मानवीय?" राजा ने पूछा।

"आप जीवक से प्यार से एक असम्भव वस्तु लाने के लिए कहिये। अगर उसने ला दी तो हमारे सन्देह का निवारण हो जायेगा। जीवक से कहिये कि जब आप शिकार के लिए जायें, चाहे धूप हो या बारिश, आपके सारे परिवार को और जब आप युद्ध में जाये तो आपकी सारी सेना को सिर ढाँपने के लिए एक ऐसा डेरा लाकर दे, जो मुट्ठी में आ जाये।" मन्त्री ने कहा।

देती थी, जिनको वह यक्षिणी दिखाना चाहती थी।

दूत ने वापिस जाकर जब सारा विवरण राजा को बताया तो राजा ने अपने कर्मचारियों के साथ फिर सलाह मशवरा किया।

"राजकुमार की, जो शक्तियाँ इस साजिश में मदद कर रही हैं वे मानव शक्तियाँ नहीं मालूम होती। लगता है, कोई दैवीय शक्तियाँ उसकी सहायता कर रही हैं। अच्छा है कि हम ठीक ठीक यह बात जान लें। इसलिए आवश्यक है

इस बार जब जीवक उसे देखने आया, तो राजा ने उससे वही चीज़ माँगी, जो मन्त्री ने माँगने के लिए कही थी। पिता की इच्छा पर चकित होकर जीवक ने कहा—"कोशिश करूँगा।" वह पत्नी के पास गया। उससे अपने पिता के इच्छा के बारे में कहा।

"हम ऐसा डेरा आसानी से बना सकते हैं।" शम्पालता ने कहा जब वह

पिता देखने जा रहा था, तो उसने डेरा उसे दिया। उसे ले जाकर जीवक ने पिता को दिया। जब राजा ने डेरा खोलना शुरु किया तो वह एक कोस लम्बा और एक कोस चौड़ा निकला।

जीवक के चले जाने के बाद, राजा ने फिर अपने सलाहकारों की एक बैठक बुलाई। "इसमें कोई सन्देह नहीं है कि कोई दैवीय शक्ति ही इसकी मदद कर रही है। अब क्या किया जाय?" सलाहकारों से उसने पूछा।

"इस बार जब जीवक आये, तो उसकी हत्या करवा दो।" एक ने सलाह दी। राजा इसके लिए नहीं माना। जब कि इसके लिए प्रमाण नहीं हैं कि वह विद्रोह करने की सोच रहा है, उस हालत में यदि हमने हत्या करवादी तो वे दैवीय शक्तियाँ, जो अब उसकी मदद कर रही हैं, वे यूँहि देखती नहीं रहेंगी? ऐसा करेंगे, तो हम खुद मौत को बुला रहे होंगे।"

"सच है महाराज, हमें सूझ बूझ से इस खतरे से बचना होगा। जो बड़ी से बड़ी सेना को जीत सके, अगर एक ऐसा

आदमी आपकी तरफ़ रहे, तो इससे अच्छी बात कोई नहीं हो सकती। आप वैसे आदमी को, जीवक से लाने के लिए कहिये। अगर उसने आपकी इच्छा पूरी कर दी तो साफ़ हो जायेगा कि उसके मन में कोई दुरूद्देश्य नहीं है और आपका शत्रु का भय भी जाता रहेगा।" मन्त्री ने कहा।

जीवक उसे फिर एक बार देखने आया, राजा ने कहा—"बेटा, आजकल हमें शत्रु का भय बहुत अधिक हो गया है। अगर तुम किसी आदमी को ला सके, जो मेरी आज्ञा पर बड़ी से बड़ी सेना जीत

58 59

सके, तो मैं निश्चिन्त होकर रह सकूँगा।"

यह इच्छा जीवक को असम्भव सी लगी। फिर भी उसने अपनी पत्नी से अपने पिता की इच्छा के बारे में कहा।

"आपके पिता को जो माँगना नहीं चाहिए था, वही उन्होंने माँगा है।" शम्पालता ने कहा।

"मैंने तभी सोचा था कि इतना शक्तिशाली कहीं नहीं होगा।" जीवक ने कहा।

"होने को तो है, मेरा भाई ही वैसा है। अगर मैं कहूँगी, तो वह आपके

पिता के पास चला जायेगा और जो वे कहेंगे, वह करेगा। पर मेरा भाई बड़ा गुसैल है, जबर्दस्त है....मुझे नहीं मालूम कि तुम्हारे पिता की उससे निभेगी कि नहीं!"

"अगर वह मेरे पिता की आज्ञा मानने के लिए तैयार हो तो वह कितना भी गुसैल क्यों न हो, कोई बात नहीं है। क्या कृपा करके उसे तुम मेरे पिता के पास भेज सकोगे?" जीवक ने कहा।

"आज ही भेज दूँगी।" शम्पालता ने कहा।

उस दिन कोशल राजा, जब भरे दरबार में बैठा था, तो एक भयंकर आकृतिवाला, तीस मन की लोहे की गदा कन्धे पर रखकर, इस तरह चलता आया कि भूमि ही काँप उठी। राजा के सामने उसने खड़े होकर पूछा—"तुमने मुझे बुलाया है! किस काम पर बुलाया है?" उसकी भयंकर आवाज़ से सभा भवन गूँज उठा। सब भय के कारण काँपने लगे। राजा उसको देख न सका और उसने अपने दोनों हाथ आँखों पर रख लिए।

"अरे, पूछ रहा हूँ कि क्यों बुलाया है और तुम कुछ बोलते नहीं हो।" कहकर

उसने अपनी गदा, राजा के सिर पर रखी। तुरत राजा का सिर फूट पड़ा और वह मर गया।

"अरे....अरे....यह क्या हो गया.... यह भी क्या जुल्म है!" मन्त्री आदि चिल्लाये। उसने उन सबको भी अपनी गदा से ज़रा दबाया और वे भी ठंडे हो गये।

जो मर गये थे, वे तो गये ही, बाकी सब भी लाशों की तरह चुप बैठे रहे। उनसे उस व्यक्ति ने कहा—"राजा जो कहे, उसे करने के लिए मेरे बहिनोई जीवक ने मुझे भेजा है, पर तुम्हारा राजा मुझे देखकर डर गया। उस जैसे के नीचे मैं कैसे काम कर सकता हूँ! अब से तुम्हारे राज्य का, मेरा बहिनोई जीवक ही राजा होगा। अगर किसी को इस पर आपत्ति हो तो अभी बताओ।"

कोई नहीं बोला। शम्पालता का भाई, जिस तरह आया था, उस तरह चला गया।

जो कुछ हुआ था, उसे सुनकर जीवक को बड़ा दुख हुआ।

"जिस दिन तुम्हें, तुम्हरे पिता ने शत्रु समझा, उसी दिन ही उसने मौत मोल ले ली थी। वह छुपे छुपे तुम्हारी हत्या भी करवा देना चाहता था। मनुष्य जिस प्रकार अपनी इच्छाओं को सफल कर लेते हैं, उसी प्रकार आनायास अपने भयों को भी सफल कर लेते हैं।" शम्पालता ने कहा।

इसके बाद वे दोनों अपने गुप्त निवास से अपने नौकर चाकरों के साथ कोशल चले आये। वहाँ अपना राज्याभिषेक करवाकर, बहुत दिन राज्य करते रहे।

ताम्बे का टुकड़ा
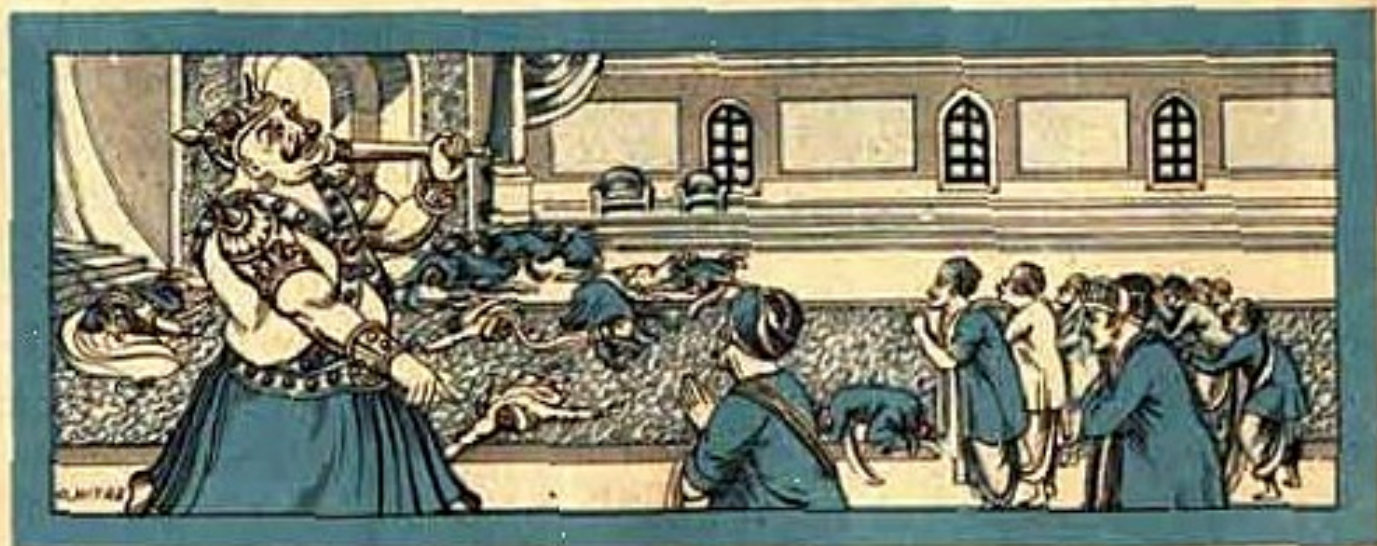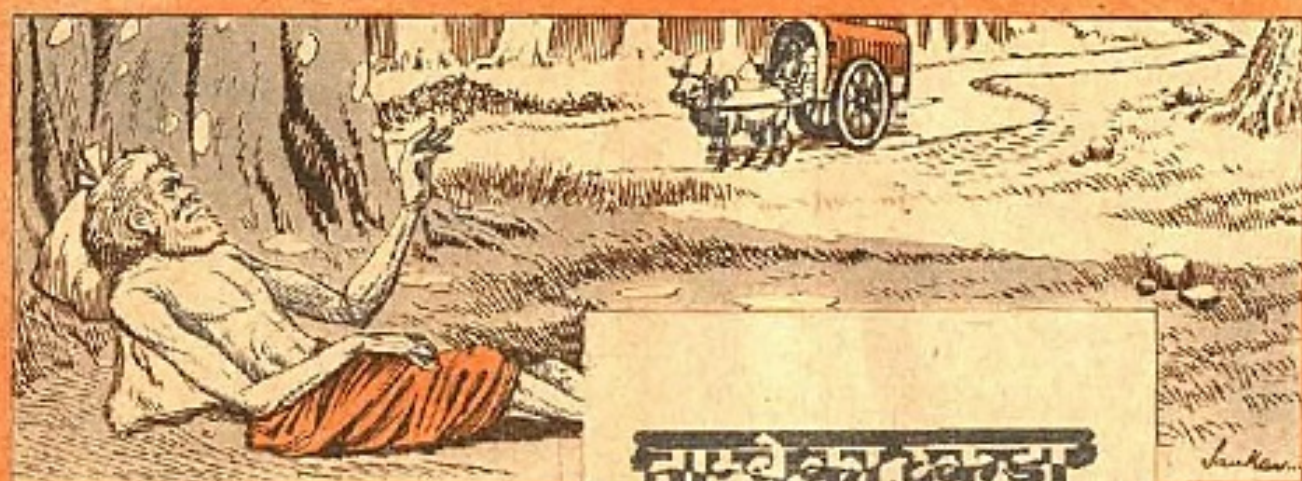
एक गाँव में बिहारीलाल नाम का एक गरीब रहा करता था। उसकी सारी सम्पत्ति केवल एक बैल गाड़ी ही थी। गाँव का हर व्यापारी माल लाने के लिए कभी न कभी बिहारी से गाड़ी भाड़े पर लिया करता। पर इस तरह की आमदनी हमेशा न रहती। वह काम तो बहुत से करता, परन्तु उसकी गरीबी बनी रहती।

एक दिन बिहारी गाड़ी में कस्बे से माल डालकर गाँव के व्यापारी के घर आ रहा था कि रास्ते में उसे एक बैरागी दिखाई दिया। वह एक पेड़ के नीचे पड़ा पड़ा किसी बीमारी के कारण कराह रहा था। उस बैरागी ने बिहारी को हाथ से रुकने का ईशारा किया। "मैं बड़ा बीमार हूँ, क्या मुझे अपनी गाड़ी में कस्बे ले जाओगे?" उसने कहा।

बिहारी ने उस बैरागी को गाड़ी पर चढ़ा लिया। कस्बे में पहुँचने पर उसने बैरागी से पूछा—"यहाँ कहाँ जाओगे?"

"मैं यह जगह नहीं जानता, किसी धर्मशाला या मठ में ले जाओ, तुम्हारा भला होगा।"

इस कस्बे में न कोई धर्मशाला है, न मठ ही। अगर किसी के घर ले गया, तो कौन मानेगा और इस बीमार बैरागी को भला रखेगा भी कौन? इसलिए वह उसे अपने घर ले गया। फिर माल व्यापारी के यहाँ उतारकर वापिस घर चला आया।

जब बिहारी वापिस आया, तो बैरागी झोंपड़े में एक कोने में पड़ा पड़ा कराह रहा था। बिहारी को उसकी पत्नी ने अलग ले जाकर कहा—"रास्ते चलते

ति 62

आदमी को क्यों घर ले आये ? यह आदमी कभी भी मर सकता है। अगर कोई ऐरा गैरा हमारे घर में मर गया, तो हम कैसी दिक्‍कतों में पड़ेंगे, कभी यह भी सोचा ?

बिहारी की पत्नी ने जैसा सोचा था, वैसा ही हुआ। बैरागी आधी रात के समय गुजर गया।

"देखा, अब कैसी आफत आ पड़ी है; लोग कहेंगे कि बैरागी के पैसे के लालच में ही हमने उसकी हत्या की है। यही नहीं, लाश को दफनाने के लिए जाने कितना खर्च हो। पहिले श्मशान का कर लाना होगा, कहाँ से लायें उतना रुपया !" बिहारी की पत्नी ने पूछा।

"जो हुआ सो हुआ, अब बताओ कि क्या किया जाय !" बिहारी ने पूछा।

"और क्या किया जाय ? अन्धेरा होने के बाद यह हमारे घर आया था। इसलिए कोई नहीं जानता कि यह आया भी था। सवेरे होते होते हम इस शव को गाड़कर गायब कर दें, तो अच्छा होगा।" बिहारी की पत्नी ने कहा।

बिहारी के घर के पीछे कुछ दूरी पर काँटों की झाड़ियाँ थीं। बिहारी ने वहाँ
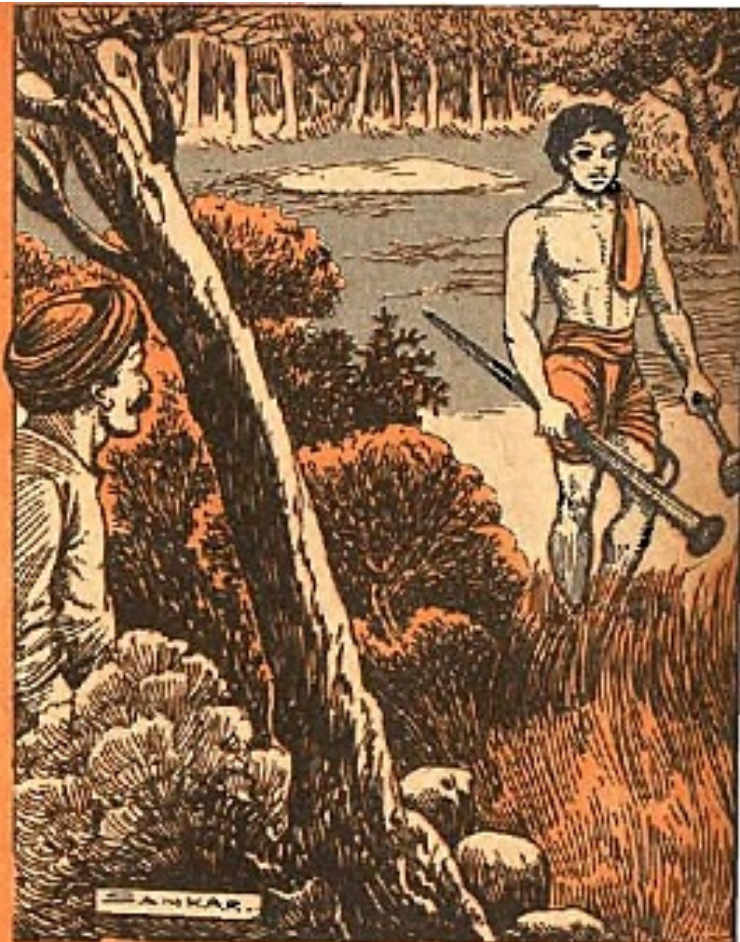
जाकर एक गढ़ा खोदा। शव को ले जाकर, उसमें गाड़कर वह सवेरे से पहिले ही घर वापिस चला आया। उस झुटपुटे में बिहारी को उन झाड़ियों में एक आदमी ने देखा। उसने सोचा कि बिहारी कोई खजाना गाड़कर आया था। जब उसने पास जाकर गढ़े में खोदा और शव को पाया, तो यह सोच कि शायद यह कोई हत्या वत्या का मामला था, वह इस तरह चला गया, जैसे न कुछ देखा हो न सुना ही हो।

झोंपड़ी के कोने में बैरागी का झोला पड़ा रहा। उसमें कुछ चीथड़े पड़े हुए

थे। बिहारी उस झोले को दूर फेंक आया। अगले दिन उसके बच्चों ने पूछा—"रात जो बैरागी आया था, वह कहाँ है?" बिहारी ने कहा कि वह सवेरे ही उठकर चला गया था।

जब वे सवेरे तालाब के पास खेलने गये, तो वहाँ बैरागी का झोला दिखाई दिया। उसमें उन्हें एक जंग खाया ताम्बे का टुकड़ा दिखाई दिया।

गाँव के बच्चों का पढ़ानेवाला अध्यापक जब तालाब के पास आया तो बिहारी के बच्चों के हाथ में उसने ताम्बे का टुकड़ा देखा। उसे जाँचने पर उसने उस पर अक्षर देखे। उसने उसे खूब माँजकर धोया। उसके अक्षर पढ़कर उसने बच्चों से पूछा—"यह तुम्हें कहाँ मिली थी?"

"कल शाम अन्धेरा होने के बाद एक बैरागी हमारे घर आया। जाते जाते वह अपना झोला फेंकता गया और उसमें यह टुकड़ा मिला।" उन्होंने कहा।

उनके बताने पर जब अध्यापक ने झोला जाकर देखा, तो सिवाय चीथड़ों के कुछ न मिला। उसने बिहारी के पास जाकर कान में पूछा—"कल तुम्हारे घर एक बैरागी आया था....वह कौन है?"

"कहाँ चला गया है, मुझे नहीं मालूम। बिना कहे ही वह चला गया। झोला यहीं छोड़ता गया, मैंने ही उसे दूर फेंक दिया था, उसमें काम की कोई चीज़ नहीं है।" बिहारी ने कहा।

अध्यापक ने ताम्बे का टुकड़ा दिखाकर पूछा। "कहीं उस बैरागी ने तुम्हें तो यह नहीं दिया था?"

बिहारी ने उसे उलट पलटकर देखकर कहा—"नहीं तो, यह झोले में था.... मैंने इसे झोले के साथ फेंक दिया था।"

"अरे पगले! जानते हो इससे कितना कुछ कमाया जा सकता है? इसमें सिद्ध बैरागी मन्त्र है। श्मशान में कभी के गाड़े हुए मुरदों के साथ गड़े खज़ाने, उस मन्त्र को जाननेवाले को मिल सकते हैं। अमावस्या की रात को श्मशान के नीचे की पाताल गुफ़ा तीन घड़ी के लिए खुल जायेगी। इस बीच में मन्त्र जाननेवाला जितना धन चाहे बटोरकर ले जा सकता है।

अध्यापक के मन्त्र पढ़ने पर बिहारी ने उसको कंठस्थ कर लिया, तीन दिन बाद अमावस्या आयी। आधी रात से पहिले ही बिहारी और अध्यापक श्मशान गये। अध्यापक बाहर खड़ा रहा और बिहारी अन्दर गया। "ठीक आधी रात होते ही बताऊँगा। मन्त्र पढ़ना। यदि खजाना दिखाई दे तो जितना मिले उतना बटोर लाना। तीन चार घड़ी से अधिक श्मशान में न रहना। समझे।"

अध्यापक के ईशारा करते ही बिहारी ने मन्त्र पढ़ा। मन्त्र के पूरा होते ही, बिहारी को ज़मीन में एक बड़ी गुफ़ा दिखाई दी। उसमें इतनी रोशनी थी कि दिन-सा लगता था। वहाँ कितने ही रत्न और सोना था,
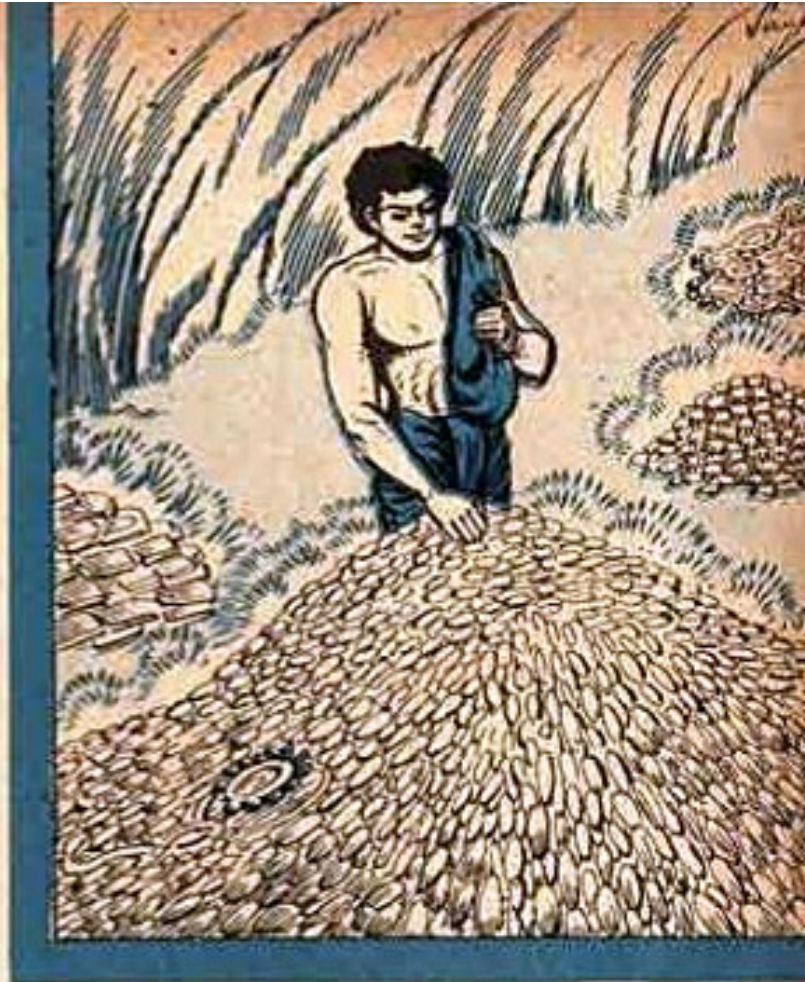
बिहारी दो मुट्ठी भर सोना लेकर बाहर चला आया। उसने एक मुट्ठी सोना अपने पास रख लिया और दूसरी मुट्ठी अध्यापक को दे दी।

बिहारी जैसे गरीब के पास सोना देख सबको आश्चर्य हुआ। उस दिन एक आदमी ने जो कुछ देखा था, उसके बारे में उसने व्यापारी से कहा। व्यापारी भी बिहारी के हाथ में रुपया देखकर चकित था, उसने बिहारी से पूछा—"तुम्हारे पास सोना कहाँ से आया? किसी को मारकर तुमने यह पाया है?

अगर सच न बताया तो तुम्हारी शिकायत करूँगा।"

बिहारी घबरा गया, जो कुछ बीता था, उसने व्यापारी को बता दिया। ताम्बे का टुकड़ा भी उसने दिखाया। "इसे मेरे पास रहने दो। अमावस्या की रात को इसके बारे में सब मालूम कर लूँगा। अगर तुम्हारी बात झूटी निकली तो तुम्हें फाँसी दिलवा दूँगा। अगर सच निकली तो ताम्बे के टुकड़े को मैं अपने पास ही रख लूँगा। जितना धन तुम जब चाहोगे, उतना दे दूँगा।" बिहारी को यह मानना पड़ा।

फिर अमावस्या आयी। व्यापारी आधी रात के समय एक छोटा-सा लालटेन हाथ में लेकर ताम्बे का टुकड़ा लेकर, एक बोरा लेकर श्मशान गया।

आधी रात होने से पहिले लालटेन की रोशनी में ताम्बे के टुकड़े पर खुदा मन्त्र उसने बार बार पड़ा। ठीक आधी रात के समय उसके सामने बड़ा प्रकाश हुआ। वह प्रकाश जिस गुफ़ा से आ रहा था, उसमें अनन्त धन-राशि थी। व्यापारी बोरा लेकर गुफ़ा में गया। अच्छे अच्छे रत्न उसने चुने। उसका बोरा अभी एक चौथाई भी न भरा था कि प्रकाश खतम हो गया, गुफ़ा बन्द हो गई।

व्यापारी यह भूल गया कि उसे तीन घड़ी में वापिस चले जाना था। ताम्बे का टुकड़ा भी गुफ़ा में ही रह गया।

व्यापारी का क्या हुआ था, गाँव में कोई न जानता था। वह जो लालटेन ले गया था, वह मात्र श्मशान में मिली।

कृष्णावतार

करवीपुर पहुँचते ही कृष्ण और बलराम ने वहाँ पहरेदारों से अपने बारे में बताया और कहा कि वे सृगाल वासुदेव से युद्ध करने आये थे। इसलिए उसे तुरत युद्ध करने के लिए आने को कहो। उन्होंने जाकर, यह खबर अपने राजा को दी।

यह सुनते ही सृगाल वासुदेव ने आँखें लाल कीं। सूर्य के दिये सुए सोने के रथ पर सवार होकर, सोने का कवच धारण कर, अचूक धनुष बाण, तलवार आदि शस्त्र लेकर, सेना को साथ न आने के लिए कहकर, वह अकेले ही युद्ध के लिए निकल पड़ा।

यम की तरह आते हुए सृगाल वासुदेव को देखकर, बलराम कृष्ण कुछ घबराये। किन्तु दमघोष ने उनका हौंसला बढ़ाया। फिर कृष्ण अपने रथ को शत्रु के रथ के सामने ले गया। उसके बाद फिर दोनों में भयंकर द्वन्द्व युद्ध हुआ।

एक दूसरे पर उन्होंने बाणों की वर्षा की। एक दूसरे के अस्त्र उन्होंने काटे। कृष्ण ने अपने विरोधी का धनुष तोड़ दिया और सारथी को मार दिया।

सृगाल वासुदेव ने इसकी परवाह न की। उसने एक और धनुष ले लिया। रथ को स्वयं चलाते हुए उसने कृष्ण से कहा—"गोमन्त के पास कुछ राजाओं

१४. सृगालवासुदेव वध
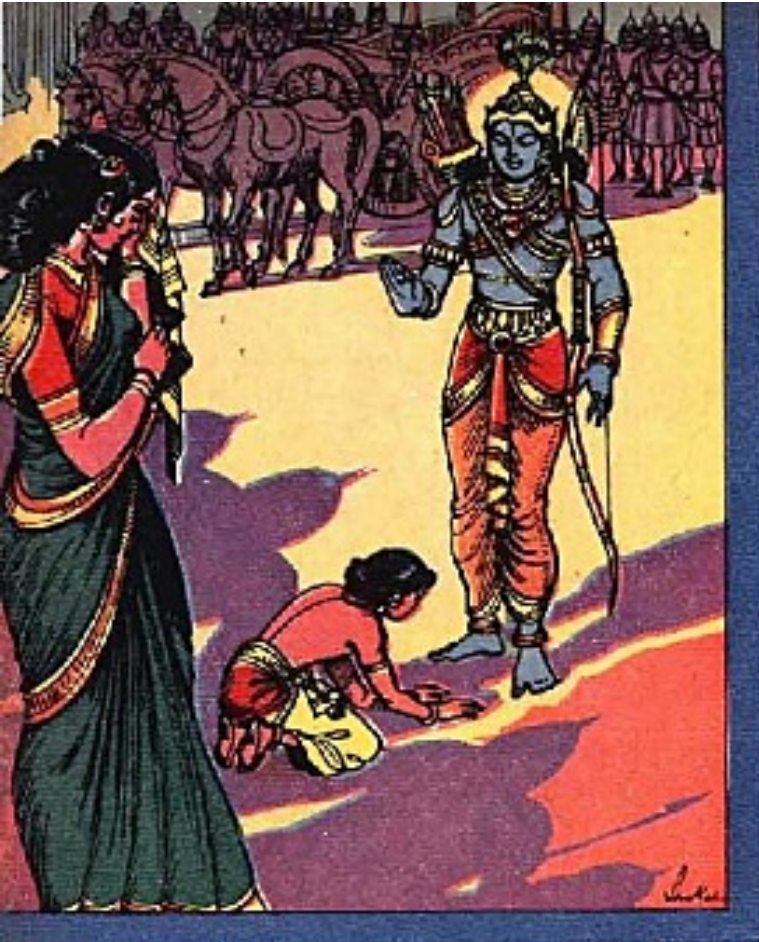
को पीटकर, उस गर्व में यहाँ आये हो. वे राजा छोटे थे। मैं अकेला आया हूँ। तुम भी मेरे साथ अकेले लड़ने के लिए आये हो। यह धर्म युद्ध है। इस संसार में दो वासुदेवों के रहने की गुंजाईश नहीं है। इसलिए तुम्हें मारकर मैं ही एक वासुदेव कहलाना चाहता हूँ।"

कृष्ण ने परिहास करते हुए कहा— "अगर तुम में अब भी युद्ध की इच्छा हो तो तुम अपना प्रताप दिखाओ, देखता हूँ। उसके बाद जो कुछ मुझे करना है, उसके बारे में अभी कहने की कोई ज़रूरत नहीं है।"

सृगाल वासुदेव बड़ी तेज़ी से कृष्ण पर बाण, चक्र, कुल्हाड़ियाँ, तलवार...इस तरह फेंकने लगा कि अन्धेरा ही छा गया।

कृष्ण ने यह देखकर कहा—"तुमने अपनी शक्ति दिखा दी। अब देखो, मैं अपनी दिखाता हूँ।" कहकर उसने अपने चक्र का उपयोग किया।

वह भयंकर रूप से घूमता, सृगाल वासुदेव के सिर पर लगा। उसके दो टुकड़े करके कृष्ण के हाथ में वापिस आ गया।

यह सुनकर, सृगाल वासुदेव युद्ध में मर गया था, उसके अन्तःपुर की स्त्रियाँ जोर से रोती हुई उस जगह आईं, जहाँ उनका पति मार दिया गया था।

मुख्य रानी अपने लड़के शक्रदेव को लाई। उसे कृष्ण के पैरों पर डालकर रोई।

कृष्ण ने उसको आश्वासन दिया। मन्त्रियों, सामन्तों, नगर के प्रमुखों और पुरोहितों को बुलाकर शुक्रदेव का राज्याभिषेक किया।

जब कृष्ण के मामा दमघोष को मालूम हुआ कि कृष्ण मथुरा वापिस जा रहा था, तो वह भी अपनी सेना के साथ चेदि देश चला गया ।

बलराम कृष्ण पाँच दिन यात्रा करके मथुरा नगर पहुँचे । नगर के दूरी पर दिखाई देते ही, कृष्ण ने पाँचजन्य बजाया ।

वह शंखनाद सुनकर यादव, उग्रसेन, प्रधान पुरोहित को साथ लेकर, हाथियों और घोड़ों को तैयार करके, धान लेकर, मंगल वाद्यों के साथ उनकी अगवानी करने गया । ब्राह्मणों के आशीर्वाद से आकाश गूँज उठा । बलराम कृष्ण बड़े वैभव के साथ मथुरा में आये ।

कृष्ण बलराम के हाथ हारकर, मगध वापिस जाकर जरासन्ध अपमान से गला जा रहा था । इतनी सारी सेना, इतने सारे राजाओं को साथ लेकर गया था और दो यादव बच्चों द्वारा हराये जाने से अधिक क्या लज्जाजनक बात हो सकती है । इस अपमान के कारण उसके मन की शान्ति जाती रही ।

आखिर, जरासन्ध ने सब राजाओं को फिर एकत्रित किया । "जब पापी भाग्य
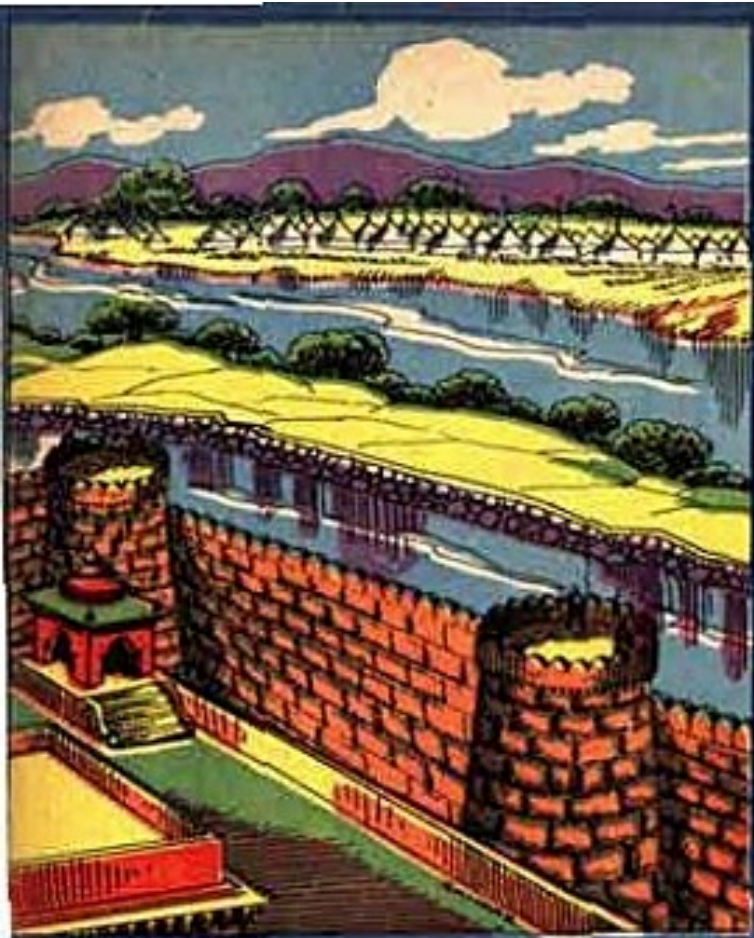
ने साथ न दिया, तो हम इतने पराक्रमी होकर भी दो ग्वाले लड़कों से हरा दिये गये। यह कलंक हम पर हमेशा के लिए रहेगा। इस कलंक को हटाने के लिए इन यादवों को मारने के अलावा कोई और रास्ता नहीं है। तुम सब अपनी सेना लेकर मथुरा पर आक्रमण करो। हमारी सेनाओं के सामने इन छोटे यादवों का टिक कर लड़ना असम्भव है।"

इस बात का सब ने समर्थन किया, क्योंकि वे सब गोमन्त के पास अपमानित हुए थे। यही नहीं, उनमें जरासन्ध के सम्बन्धी, मित्र और बन्धु भी ये थे। पौन्ड्र, कलिन्ग, दन्तवक्त्र, शिशुपाल, साल्व, रुक्मी, गान्धार, त्रिगर्त, भगदत्त और कृष्ण के विरोधी भी उनमें थे।

अंग, वंग, विदेह, काशी, करूषा, भद्र, पान्डय आदि देशों के राजा भी जरासन्ध की तरफ़ से लड़ने के लिए तैयार हो गये। फिर इक्कीस अक्षौहिणी सेना इकठ्ठा हो गई। वे सब मथुरा नगर पहुँचे। नगर के चारों ओर के बागों में उन्होंने पड़ाव किया।

कृष्ण आदि ने जब किले की दीवारों से देखा, तो जरासन्ध की सेना प्रलय की तरह चारों ओर पड़ी हुई थी।

कृष्ण ने बलराम की ओर देखकर हँसते हुए कहा–"परमात्मा भूमि का भार कम करने के लिए व्यवस्था कर रहे हैं।"

दोनों ने सेना लेकर उनका विरोध करने को निश्चय किया।

जरासन्ध ने उन राजाओं से अपने युद्ध तन्त्र के बारे में यह बताया–"तुरत सेनाओं को मथुरा नगर को घेर लेना चाहिए। जहाँ जहाँ सम्भव हो, किले की दीवारों को तोड़ दो। नगर को पूरी

तरह ध्वंस कर दो, गोमन्त पर्वत को घेरते समय, जो जो, जहाँ जहाँ था, वह वह वहीं रहे।" जरासन्ध ने सेना की उसी प्रकार व्यवस्था की।

इस बार यादव, जरासन्ध से युद्ध करने के लिए नहीं हिचके। सच कहा जाये तो जरासन्ध की सेना के सामने उनकी सेना कुछ न थी, पर उनको यही हौंसला था कि कृष्ण उनके साथ था।

गरुत्मान के झण्डेवाले रथ में सवार होकर, चक्र आदि हथियार रखकर कृष्ण, हल, ओखल आदि लेकर बलराम, जब युद्ध के लिए निकले तो लोग बहुत खुश हुए।

वे दोनों उग्रसेन के साथ अपनी सेनायें जरासन्ध की सेनाओं के पास ले गये। अपनी सेना के सामने खड़े होकर जरासन्ध ने उनका सामना किया।

कृष्ण के पास खड़े उग्रसेन से जरासन्ध ने कहा—"भोजवंश के राजा जब राज्य करते हैं, तो यादव उनकी सेवा करते हैं। उस तरह के भोजवंश में पैदा होकर भी तुम वंश की प्रतिष्ठा खो बैठे हो। तुम से बढ़कर कोई मूर्ख होगा? इस कृष्ण ने तुम्हारे लड़के को मारकर, राज्य हथियाकर खाली सिंहासन तुम्हें दे दिया है। तुम उसकी जूठन खा रहे हो, क्यों? उम्र हो गई है? तुम्हारा भी कोई जीवन है? शर्म नहीं आती? तुम कृष्ण के नौकर हो, राजा नहीं हो। तुम जैसे को मैं नहीं देख सकता।"
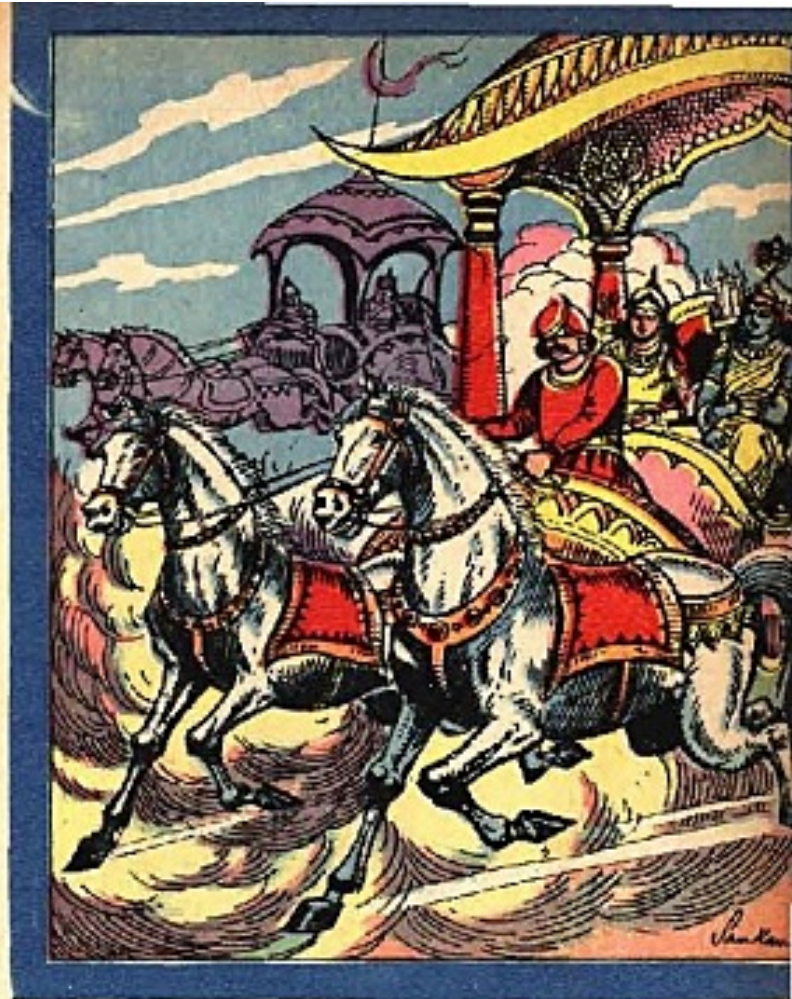
कृष्ण यह सुनकर झुँझला उठा। "आदरणीय उग्रसेन की निन्दा करने में ही क्या तुम्हारा पौरुष है? अगर कुछ कहना है तो मुझ से कहो, मैं ही तो तुम्हारा असली विरोधी हूँ। उस दिन
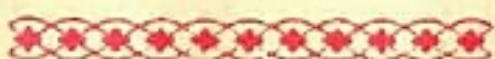
बलराम को, अपनी तरफ़ की सेना को भेड़ों की तरह हांकता देख, जरासन्ध ने उसका मुक़ाबला किया। दोनों ने एक दूसरे के रथ तोड़ दिये। गदा युद्ध करने लगे। उनका युद्ध देखने के लिए औरों ने युद्ध करना छोड़ दिया। वे दोनों एक दूसरे के चोट से बचते रहे। गदाओं से मारते रहे। दोनों खून से लथपथ थे... दो शेरों की तरह युद्ध कर रहे थे। भूमि कांप रही थी। आखिर...बिना किसी के दूसरे को मारे ही वह गदा युद्ध समाप्त हो गया।

गोमन्त के पास मुझ से ही तो युद्ध किया था, ऊँटपटांग बातें मत करो। इस बार बिना भागे, डटकर युद्ध करो। मेरा प्रताप ठीक ठीक देख लेना।" कहकर उसने जरासन्ध और उसके सारथी को बाण से मारा और उनके धनुष तोड़ दिये।

दोनों पक्षों के बीच में जोर से युद्ध होने लगा। उस युद्ध में उग्रसेन ने भी बड़ा पराक्रम दिखाया। एक बार, कृष्ण और रुक्मि का द्वन्द्व युद्ध हुआ। उसमें रुक्मि बुरी तरह हार गया और भाग गया।

इस प्रकार कुछ दिन युद्ध चलता रहा। जरासन्ध जैसा चाहता था, विजय न पा सका। उसकी सेना प्रति दिन घटती जाती थी। वह थक गया। यह सोचकर, भाग्य उसका साथ नहीं दे रहा था, वह साथ आये हुए राजा और सेना को रंगभूमि से ले गया। वह मगध चला गया।

जरासन्ध इतने से छोड़नेवाला न था। इस प्रकार उसने मथुरा पर अट्ठारह बार आक्रमण किया। जरासन्ध कृष्ण को न मार सका। कृष्ण भी जरासन्ध को न
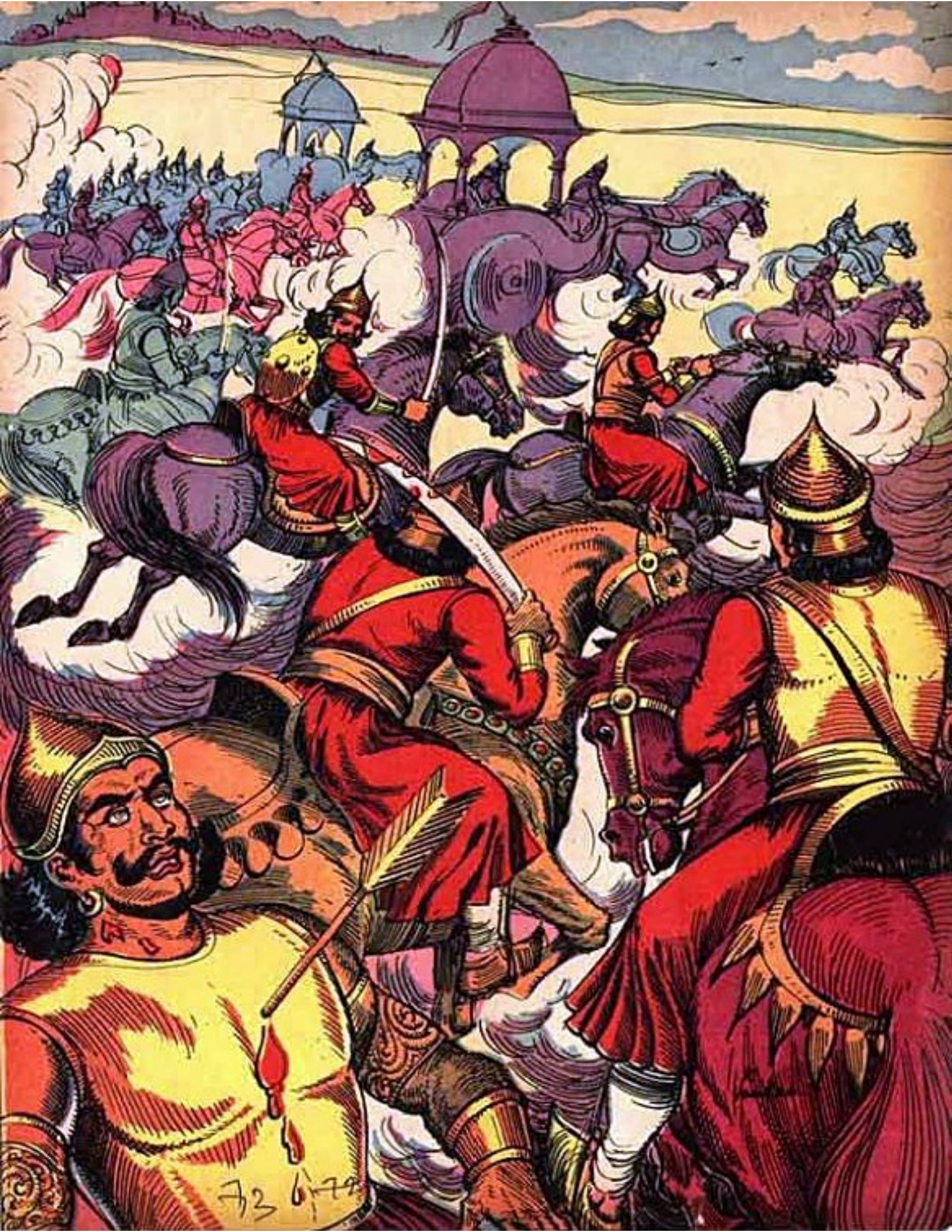
मार सका। जरासन्ध की मृत्यु किसी और के हाथ बदी थी।

दिन बीतते जाते थे। बलराम को एक दिन बचपन याद आया और उसने गोकुल देखना चाहा। जब यह बात उसने कृष्ण से कही, तो वह साथ नहीं आया, परन्तु उसे जाने के लिए कहा। बलराम गोकुल गया। गोपालक उसे दूरी पर देखकर बड़े खुश हुए। बलराम ने कई को नमस्कार किया। कई ने उसको नमस्कार किया। कई का उसने आलिंगन किया। गोपिकाओं ने जब उसे घेर लिया तो उसने उनसे सप्रेम बात की।

वृद्ध गोपों ने उसे अपने बीच बिठाकर उसके साथ गप्प की।

"बेटा, तुम्हारा आना बड़ी बात है। कोई चाहे, कितना भी बड़ा हो, जन्मभूमि को नहीं भूल सकता...इसके लिए इससे अच्छा क्या उदाहरण हो सकता है? तुम भाइयों ने चाणूरमुष्टि को मार दिया है। कंस को मार दिया। गोमन्त के पास बड़ी सेना को हरा दी। सृगाल वासुदेव को मार दिया। बहुत यश पाया है। पर...तुम उस जगह को खोजते आये, जहाँ कभी तुम ने गौवें चराई थीं।" बड़े बूढ़ों ने कहा।

"तुमने पाला था, तभी तो हमें इतना यश मिला है। क्या हमें तुम जैसे बन्धु मिलेंगे? मेरा और मेरा भाई का उन राजसीय भोगों पर मन नहीं लगता और बचपन में जो हमने दिन यहाँ काटे थे, वे भुलाये नहीं भूलते हैं।" बलराम ने कहा।

यह सुनकर सब बड़े खुश हुए। सब ने उसको खाने पीने की चीजें देकर उसका आदर सत्कार किया। (अभी है)

[१७]

दो बड़े बड़े तकड़े बन्दर, मौवली को अपनी बाहों में पकड़कर पेड़ों के ऊपर से भागते जाते थे। वे इतनी तेज़ दौड़ रहे थे कि मौवली का सिर चकरा रहा था। जब वह नीचे जमीन की ओर देखता तो उसका दिल बैठ जाता। पर हवा में उड़ने का भी मजा कम न था। मौवली को ऊँची टहनी से दूर दूर तक जंगल फैला नज़र आता। ऊपर की टहनियों पर चढ़ते, नीचे की टहनियों पर कूदते, किलकारियाँ करते, चीखते, चिल्लाते बन्दर पेड़ों पर से अपने रास्ते पर चले जा रहे थे।

पहिले तो मौवली डरा कि कहीं बन्दर उसे नीचे न छोड़ दें। फिर उसे गुस्सा आया। पर उसने अपना गुस्सा न दिखाया। फिर वह सोचने लगा। तुरत बघेल और भालू को खबर पहुँचानी थी। वे बन्दरों की तरह तेज़ नहीं भाग सकते थे। कौन खबर पहुँचाये? नीचे सिवाय टहनियों और पत्तों के कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। मौवली ने नीले आकाश की ओर देखा। वन में कब कौन जीव मरता है, इस ताक में, गिद्ध आकाश में मँडरा रहे थे।

गिद्ध ने देख लिया कि बन्दर किसी को ले जा रहे थे। उसे देख शायद खाने के काम में आ जाये, यह सोचकर गिद्ध कुछ सौ गज नीचे उतर आया। पास आने पर उसे मौवली दिखाई दिया। गिद्धों की भाषा में मौवली ने कहा—

"मौवली...." मौवली ने कहा।

गिद्ध तुरत ऊपर उठा और आकाश में तारे की तरह दिखाई देने लगा। और जान गया कि बन्दर किस रास्ते जा रहे थे।

इस बीच भालू और बघेल के गुस्से का ठिकाना न था। बघेल, ऊँचे ऊँचे पेड़ों पर, जिन पर वह कभी पहिले नहीं चढ़ा था, चढ़ने लगा। उसके भार से कई टहनियाँ टूट गईं। उसके नाखूनों में पेड़ों के छिलके फँस गये। उसने अपना गुस्सा भालू पर दिखाते हुए कहा—"मौवली को पहिले क्यों नहीं खबरदार किया था?"

"अगर हम जल्दी जल्दी गये, तो शायद उनको पकड़ लेंगे।" भालू ने हाँफते हाँफते हुए कहा।

"तुम न भागो....अगर एक मील और भागे, तो पके फल की तरह फूट जाओगे। कहीं आराम से बैठकर कुछ सोचो। यह बच्चों को ढुले मारना नहीं है। अगर हमने उन दुष्टों का पीछा किया, तो वे उसे नीचे छोड़ सकते हैं।" बघेल ने कहा।

"हम और तुम एक हैं" गिद्ध आश्चर्य में चिलाया। फिर मौवली को जिस मार्ग पर ले जाया जा रहा था, वह भी वहीं वहीं ऊपर ऊपर उड़ने लगा।

"मैं, जिस रास्ते ले जाया जा रहा हूँ, उसे अच्छी तरह जान लो और इसकी खबर भालू, बघेल और चोटी पर के हमारे झुण्ड को बताओ।" मौवली ने गिद्ध की भाषा में गिद्ध से कहा।

"तुम्हारा नाम क्या है?" गिद्ध ने पूछा। वह तब तक मौवली को नहीं जानता था।

"अरे बाप रे बाप, छोड़ देंगे।" कहकर भालू सिर पर हाथ रखकर, चिन्ता और दुख में इधर उधर झूलने लगा।

"अरे ठहरो, अगर तुम यूँ रोने लगे, तो देखनेवाले क्या कहेंगे! मान लो मैं ही तुम्हारी तरह रोने लगूँ तो...." बघेल ने उसे समझाया।

"कोई कुछ समझे, इससे मुझे क्या! मान लो, अगर वह अब तक कहीं मर गया हो तो....! यूँ कहकर भालू अपने को बुरी तरह कोसने लगा।

इतने में भालू ने झूलना बन्द कर दिया और सीधे खड़ा हो गया। उसे एक बात सूझी।

"चलो हम अजगर काबा के पास चलें। बन्दर उससे बहुत डरते हैं। वह बन्दरों की तरह तेज़ी से पेड़ों पर चढ़ सकता है, उनके साथ जा सकता है। रात के समय वह उनके बच्चों को निगलता रहता है।" भालू ने कहा।

"पापी आँखें। पैर तो हैं ही नहीं, हमारी जाति का ही नहीं है। वह भला

हमारी क्या मदद करेगा !" बघेल ने सन्देह करते हुए कहा।

"वह बड़ा तजुर्बेकार है। बड़ा चालाक है। हमेशा भूखा रहता है। कहेंगे कि उसे ढ़ेर-सी बकरियाँ देंगे !" भालू ने कहा।

"पेट में अगर कुछ चला गया, तो महीने भर सोता रहता है। कहीं सो रहा होगा। मान लो नहीं भी सो रहा है, अगर वह कह उठे कि तुम्हारी बकरियाँ किसको चाहिये, तब क्या करेंगे !" बघेल ने फिर सन्देह प्रकट किया।

सच कहा जाये, तो बघेल को काबा के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था।

"क्या तुम और हम इतने अनाड़ी हैं !" भालू ने अपना कन्धा बघेल से रगड़ते हुए कहा।

दोनों अजगर काबा को ढूँढ़ने निकले। काबा उनको एक गरम पत्थर पर दुपहर की धूप में लेटा हुआ दिखाई दिया। उसने पिछले दस दिनों में अपनी केंचुली छोड़ दी थी और वह नई केंचुली में चमचमा रहा था। छ हाथ का उसका शरीर बल खाकर पड़ा था। वह भोजन के बारे में सोचता, ओठ मल रहा था।

भालू ने काबा को देखते ही, बघेल से कहा। "भूखा है। अभी तक पेट में कुछ नहीं गया है। खबरदार! जब वह केंचुली छोड़ता है, तो उसको ठीक तरह नहीं दिखाई देता है। फिर जल्दबाजी भी खूब दिखाता है।"

काबा जहरीला नहीं था। उसे जहरीले साँपों से कुछ चिढ़ भी थी, क्योंकि वे डरपोक होते हैं। उसकी पकड़ जबर्दस्त होती है। जो उसकी पकड़ में आ जाता है, वह छूटे नहीं छूट पाता। (अभी है)

७१. बैकाल झील

साइबीरिया (रूस) में बैकाल संसार के सब झीलों से अत्यन्त प्राचीन है। अन्य झीलें १०, १५ हज़ार साल पहिले ही बनी थीं। परन्तु यह २ करोड़ वर्ष पहिले बनी थी। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह संसार की छटी झील है। इसका क्षेत्रफल १२,१५० वर्गमील है। पर इससे गहरी झील कहीं नहीं है। इसकी गहराई १६२० मीटर है (करीब करीब एक मील) क्योंकि इसमें कई ऐसी प्राणी हैं, जो समुद्रों में ही रहते हैं, इसलिए समझा जाता था कि यह उत्तरी ध्रुव समुद्र से जुड़ी हुई थी। इस झील में १८०० तरह के प्राणी हैं। इनमें से ७५ प्रतिशत कहीं और नहीं हैं। इसमें यद्यपि कई समुद्री प्राणी हैं, पर इसका पानी खारा नहीं है। प्रति वर्ष इस झील से १० हज़ार टन अच्छी मछली निकाली जाती है। कई वैज्ञानिक यहाँ आकर अनुसन्धान करते हैं। यह प्रान्त बहुत मनोहर है। ३०० नदियाँ आस पास की पहाड़ियों में से इसमें गिरती हैं। परन्तु "अंगार" नाम की एक नदी ही इससे बाहर निकलती है।

Photo by Madan Gopal

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

कदम कदम बढ़ाओ आगे,
सहायार्थ मैं दूँगा हाथ!

प्रेषक:
श्री. राम घाटे - अडगांव बुद्रुक

Photo by Prasad

पुरस्कृत परिचयोक्ति

तू राधा मैं कान्हा बनकर,
रास रचेंगे दोनों साथ !!

प्रेषक :
श्री. राम घाटे - अडगांव बुदुक

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

जनवरी १९६८ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ नवम्बर १९६७ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वडपलनी, मद्रास-२६

नवम्बर – प्रतियोगिता – फल

नवम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।

इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: कदम कदम बढ़ाओ आगे, सहायार्थ मैं दूँगा हाथ!

दूसरा फ़ोटो: तू राधा मैं कान्हा बनकर, रास रचैंगे दोनों साथ!!

प्रेषक: श्री. राम घाटे (अडगांवकर)

जि. प. हायस्कूल, पो. अडगांव बुद्रुक, ता. अकोट, जि. अकोला, (महाराष्ट्र)

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

सर्दी-जुकाम
को
जल्द दूर कीजिये

अमृतांजन

मलिये और फौरन आराम पाइये

अमृतांजन पेन बाम वैज्ञानिक मिश्रणवाली १० दवाइयों की एक दवा है—सीने के कफ और आमतौर के सर्दी-जुकाम के लिये बिल्कुल निर्दोष है, प्रभावकारी है। अमृतांजन मांसपेशियों के दर्द, सिरदर्द और मोच के दर्द में भी तुरंत फायदा पहुँचाता है। एक बार इतना कम चाहिये कि इसकी एक ही शीशी आपके घर में महीनों चलेगी। अमृतांजन की एक शीशी बराबर अपने पास रखिये।

अमृतांजन ७० वर्षों से भी ज्यादे दिनों से एक घरेलू दवा के रूप में विख्यात है।

अमृतांजन १० दवाइयों की एक दवा—दर्द और जुकाम में अचूक।

अमृतांजन लिमिटेड, मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली
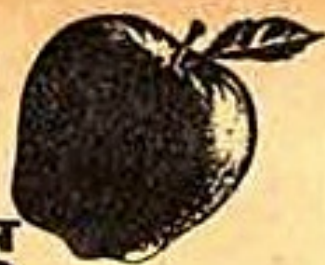
फॉस्फ़ोमिन से बल और उत्साह बढ़ता है, भूख बढ़ती है, अधिक काम करने की शक्ति प्राप्त होती है, शरीर की रोगप्रतिरोध-क्षमता बढ़ती है

जी हाँ,
सारे परिवार के स्वास्थ्य
के लिए... फॉस्फ़ोमिन!

SQUIBB
Phosfomin
VITAMINS ELIXIR

विटामिन 'बी' कॉम्प्लेक्स तथा विविध
ग्लिसियरोफ़ॉस्फेट्सयुक्त फलों के ज़ायकेवाला, हरे रंग का विटामिन टॉनिक—फॉस्फ़ोमिन

SQUIBB

® ई. आर. स्क्विब एण्ड सन्स इन्कार्पोरेटेड का रजिस्टर्ड
ट्रेडमार्क है। कामचन्द प्रेमचन्द प्राइवेट लि. को इसे उपयोग करने का लाइसेन्स प्राप्त है।

SARABHAI CHEMICALS

Shilpi SC 50 A/67 Hin

A GREAT NAME IN HANDLOOMS

BEDSPREADS
FURNISHINGS
& TOWELS

MFG: AMARJOTHI FABRICS
POST BOX NO 22 KARUR.

ज्योती हास्पिटल

बड़ी होकर मैं एक अध्यापिका बनूँगी और
तब मैं सारे छोटे-छोटे बच्चों को मॉर्टन की
मिठाइयाँ दूँगी! तभी वे बहुत अच्छे
बच्चे बनेंगे!
MORTON
विशुद्ध पदार्थों से बनी, मॉर्टन की
बहुत ही स्वादिष्ट हैं।
आज ही खरीदिये।

देखा ... गेवाबॉक्स ऐसी तस्वीर झट उतार लेता है क्योंकि इसमें १/१०० वीं सेकन्ड स्पीड भी होती है।

गेवाबॉक्स में बल्ब, १/५० वीं सेकन्ड और १/१०० वीं सेकन्ड तीन स्पीड होती है। यही वह विशेषता है जिससे यह खेल की किसी भी विशेष स्थिति की तस्वीर, पिकनिक और पार्टी की किसी भी मुद्रा की तस्वीर उतार सकता है।

गेवाबॉक्स की अन्य विशेषताएँ भी अतुलनीय हैं :

* बढ़िया चौरस (६ सीएम×६सीएम) तस्वीरें उतारता है। जो दूसरे समकक्ष कैमरे से उतारी हुई तस्वीर से ५०% बड़ी होती है। इसके एन्लार्जमेन्ट भी बढ़िया बनते हैं।
* चमकदार साफ आइ-लॅवल व्यूफाइन्डर
* २ एपर्चर (एफ ११ और एफ १६)
* मजबूत, बढ़िया इस्पात से बनी आकर्षक बॉडी।

गेवाबॉक्स को चलाना बहुत ही आसान है। आप सिर्फ 'क्लिक' कीजिए बाकी का काम गेवाबॉक्स खुद कर लेगा। मूल्य रु.४४.००। स्थानीय कर अतिरिक्त।

फ़ोटोग्राफ़ी सीखिए, गेवाबॉक्स अपनाइए। फ़ोटोग्राफ़ी एक ऐसा शौक है जिससे आप किसी भी समय की स्मृतियों के चित्र-संकलन से एक अनोखा आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

गेवाबॉक्स

गेवाबॉक्स एक लोकप्रिय कैमरा है जो बढ़िया से बढ़िया तस्वीरें उतारता है।

१०० रु. जीतिए : इनाम जीतनेका विवरण 'एग्फा गेवर्ट फ़ोटो गैलरी' नामक पत्रिका में मिलेगा। इस पत्रिका के ६ अंक मुफ्त प्राप्त करनेके लिए १ रु. डाकखर्च के लिए इस पते पर भेजिए :

AGI एग्फा-गेवर्ट इंडिया लिमिटेड,
कस्तूरी बिल्डिंग, जमशेदजी टाटा रोड, बम्बई १.

507-A Hin.

AWARDS!
WON PLENTY
YET WE DON'T SAY
WE ARE THE BEST
ONLY
WE DO OUR BEST
PRASAD PROCESS PRIVATE LTD
CHANDAMAMA BUILDINGS MADRAS-26